नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

नवांकुर की अभिनव पहल

क्रमशः

अंक 56 माह–सितम्बर–2013

प्रति,

प्रकाशक : नवांकुर प्रकाशन, गंजबासौदा दूरभाष : 221066, 220769, 223399

अन्दर के पृष्ठों पर

सार–समाचार 1
सम्पादकीय 3
स्कूल–इन्फो 4
मन्तव्य 9
मैरिटकार्ड 2013 11
शिक्षक की कलम 12
अतिथि लेख 14
कैरियर 15
विशेष लेख (परीक्षा की तैयारी) 17
पुस्तकालय 18
बच्चों की कलम 19
अपना ज्ञान बढ़ायें 28
पहेलियाँ 30
विभिन्न स्कॉलरशिप्स........30
नन्ही कूची 33
प्रतिभाएँ 34

सम्पादक मण्डलः

शैलेन्द्रकुमार पिंगले ''सुमन''
सन्दीप रावत
अजीत सिंह बैस
राजेन्द्र यादव
सुनील भावसार
अनुज गुप्ता
मुकेश शर्मा

सार-समाचार

1. **तीन पृथ्वियों वाले सौरमण्डल का पता चला** :–अमेरिका वैज्ञानिकों ने 22 प्रकाश वर्ष दूर एक ऐसे सौरमण्डल का पता लगाया है, जिसमें हमारे जैसी तीन पृथ्वियाँ मौजूद हैं। वैज्ञानिकों ने बताया कि ग्लीस 667 सी नामक इस तारामण्डल में कुल मिलाकर छः से सात ग्रह हो सकते हैं।

2.मिल्खा सिंह हाउस ऑफ लॉर्ड्स में सम्मानितः–महान भारतीय एथलीट मिल्खासिंह को खेलों के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए हाउस ऑफ लॉर्ड्स (लंदन) में विशेष समारोह में सम्मानित किया गया।

3. **बिना हेलमेट अब 100 रुपये जुर्मानाः–** राज्य शासन ने बिना हेलमेट वाहन चलाने पर होने वाले जुर्माने की राशि 500रुपये से घटाकर 100 रुपये कर दी है। साथ ही, यातायात–नियम के उल्लंघन पर 500रुपये का अर्थदण्ड लगेगा।

4. स्वास्थ रहना है, तो मोबाइल से दूर रहेंः–अमेरिका की केण्ट स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने दाबा किया है। अगर आप दिनभर अपने मोबाइल फोन से चिपके रहते हैं, तो यह आपकी सेहत और शारीरिक गतिविधियों को प्रभावित कर सकता है, एक नये शोध में पता चला है कि मोबाइल के ज्यादा इस्तेमाल का गिरती सेहत से सीधा सम्बन्ध है। यह अपनी तरह का पहला शोधा है, जिसमें मोबाइल फोन के इस्तेमाल और स्वास्थ्य के बीच के सम्बन्धों का अध्ययन किया गया है।

5. 10वीं की टॉपर पूनम को मिला फ्लैटः–म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मण्डल की कक्षा–10वीं की प्रदेश टॉपर बैतूल की पूनम घोरे को सम्मान स्वरूप एक कम्प्लीट फ्लैट दिया जायेगा। हालाँकि होशंगाबाद में फ्लैट मिल जाने पर भी पूनम का परिवार तब तक बैतूल नहीं छोडेगा, जब तक कि पूनम खुद अपने पैरों पर खड़ी न हो जाये। परिवार फ्लैट बनने के बाद उसे किराये पर देगा, ताकि पूनम की पढ़ाई का खर्चा निकल सके।

6 रवीन्द्र जडेजा नम्बर वन गेंदबाजः– इण्डिया के लेफ्ट आर्म स्पिनर रवीन्द्र जडेजा वन–डे क्रिकेट में दुनिया के नम्बर एक गेंदबाज बन गये हैं। आईसीसी की ताजा रैंकिंग में 733 अंकों

को लेकर वेस्टइण्डीज के सुनील नरेन के साथ संयुक्त रूप से, शीर्ष पर हैं।

7. **खाद्य–सुरक्षा अध्यादेश को राष्ट्रपति की मंजूरी**:–राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने देश की दो–तिहाई जनसंख्या को 1 से 3 रुपये प्रति किलोग्राम की दर पर हर महीने 5 किलोग्राम खाद्यान्न देने वाले खाद्य सुरक्षा– विधेयक को लागू करने के लिहाज से किये गये अध्यादेश पर हस्ताक्षर कर दिये हैं।

8. **खून के आँसू रोती है ये किशोरी**:–चिली की रहने वाली बीस वर्षीय किशोरी की आँखों से खून के आँसू निकल रहे हैं। उसकी यह स्थिति देखकर चिकित्सक भी हैरान हैं। ओलिवा की आँखों में यह समस्या गत माह सामने आयी। दिन–भर में उसकी आँखों से कई बार खून के आँसू झड़ते हैं।

तकिया चार्ज करेगा फोन:–अब आपके लिए फोन चार्ज करना और भी आसान हो गया है। खुद के आराम के साथ अपने फोन को भी तकिये पर आराम दीजिये, जिससे आपका फोन चार्ज हो जायेगा। जी हाँ, यह सत्य है। नोकिया एक ऐसा तकिया बना रहा है, जिस पर फोन रखते ही वह चार्ज होने लगेगा।

प्रदेश में इसी शिक्षण–सत्र से गीता का अध्याय पढेंगे छात्र:–म.प्र. के राजपत्र में 4 जुलाई को प्रकाशित अधिसूचना में कहा गया है कि माध्यमिक शिक्षा–मण्डल के परामर्श से कक्षा–9 से 12 में विशिष्ट हिन्दी की पुस्तक में भगवद् गीता के प्रगणित प्रसंगों पर आधारित एक–एक अध्याय इसी सत्र से पाठ्य–पुस्तकों में सम्मिलित किया जायेगा।

त्रिकोणीय सीरीज का फायनल भारत ने जीता:–करिश्माई कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी (नाबाद 45 रनों) ने मैच फिनिशर की अपनी भूमिका को एक बार फिर साबित करते हुए भारत को श्रीलंका के खिलाफ त्रिकोणीय एकदिवसीय टूर्नामेण्ट के, साँसों को थाम देने वाले, फायनल में एक विकेट से जीत दिला दी। यह फायनल मैच वेस्टइण्डीज में पोर्ट ऑफ स्पेन में खेला गया।

अण्डर–19 भारतीय टीम ने जीती त्रिकोणीय सीरीज:–वेस्टइण्डीज में टीम इण्डिया की खिताबी जीत के कुछ ही घण्टे बाद ऑस्ट्रेलिया में जूनियर टीम (अण्डर–19) ने भी त्रिकोणीय टूर्नामेण्ट के फायनल में मेजबान ऑस्ट्रेलिया को आठ विकेट से रौंदकर खिताब जीत लिया।

भारत बना चैम्पियन ट्राफी का चैम्पियन:–भारत ने क्रिकेट के चैम्पियन के टूर्नामेण्ट यानी चैम्पियन ट्राफी का खिताब अपने नाम कर लिया है। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने फायनल में इंग्लैण्ड को हराकर चैम्पियन ट्रॉफी का विजेता बनने का गौरव हासिल किया।

टीम इण्डिया ने रचा इतिहास:–युवा कप्तान विराट कोहली के नेतृत्व में भारत ने पाँचवां और अन्तिम वन–डे क्रिकेट मैच सात विकेट से जीत कर, जिम्बाब्वे को सीरीज में 5–0 से हरा दिया। भारत ने विदेशी धरती पर पहली बार–5–0 से द्विपक्षीय सीरीज जीती है।

एप्पल को पछाड़ सैमसंग बनी दुनिया की नम्बर वन हैण्डसेट निर्माता कम्पनी:–दक्षिण कोरिया की मोबाइल हैण्डसेट निर्माता कम्पनी सैमसंग दुनिया की सबसे अधिक मुनाफा कमाने वाली कम्पनी बन गयी है। जारी वर्ष की दूसरी तिमाही में उसने कट्टर प्रतिद्वन्द्वी एप्पल को पछाड़कर यह स्थान हासिल किया।

कानों का इस्तेमाल कर देख सकेंगे नेत्रहीन :–वैज्ञानिकों ने एक ऐसे ही क्रान्तिकारी उपकरण बनाने का दावा किया है, जिसके जरिये नेत्रहीन अपने कानों की मदद से देख सकेंगे। शोधकर्त्ताओं के मुताबिक वायस नामक उपकरण दिमाग को इस बात के लिए प्रशिक्षित करेगा कि वह किसी चीज का नाम सुनकर तेजी से उसकी छवि बना दे और ऐसा होने पर नेत्रहीन लोगों को ध्वनियों के माध्यम से छवियाँ दिख सकेंगी।

संकलनकर्त्ता–सुनील भावसार (उ.श्रे.शि.)

आवश्यकता दुर्बल को साहसी बना देती है। **सालस्त**

सम्पादकीय

शरीर का अनोखा संसार

हमारे शरीर की रचना लगती तो बड़ी सरल है, परन्तु इसकी कार्य–प्रणाली तथा सूक्ष्म रचना इतनी जटिल है कि विश्वास ही नहीं होता। दिमाग की बात करें, तो यह एक सुपर कम्प्यूटर से बढ़कर है। हमारे शरीर को वैज्ञानिक चलता–फिरता बिजली घर कहते हैं। त्वचा पर तैनात संवेदी कोष इतने सजग होते हैं कि गहरी नींद में सोते समय भी छोटा–सा मच्छर हमारे शरीर पर बैठता है, तो तुरन्त तन्त्रिका मस्तिष्क तक सूचना पहुँचा देती है और मस्तिष्क के आदेश से हाथ तुरन्त उठकर मच्छर को हटा देता है।

मट्ठी बराबर का दिल नाम का मोटर पम्प, एक पल का भी आराम किये बिना 96 हजार किलोमीटर की रक्त नलिकाओं में रक्त को लगातार चलायमान रखता है। हमारे द्वारा जरूरत से ज्यादा और शरीर के प्रतिकूल वस्तुओं को खाने से होने वाले कष्ट को गुर्दे झेलते हैं, ताकि हम स्वस्थ रह सकें। वातावरण में मौजूद रोगाणुओं और प्रदूषण के कणों और गैसों से रक्षा करने वाली त्वचा बाहरी तापमान के आधार पर हमारे शरीर के भीतरी वातावरण को सुपर एयर कण्डीशनर की तरह ठण्डा–गरम करती रहती है।

सिर्फ ग्यारह–बारह मीटर लम्बा पाचनतन्त्र, एक बड़े कारखाने की तरह काम करता है। हमारे द्वारा खाये गये पदार्थों से खास तत्त्व लेकर उन्हें ऊर्जा के रूप में बदल देता है। रक्त–नलिकाओं में घूम रही श्वेत रक्त–कणिकाएँ रोगाणुओं का आक्रमण होने पर उन पर टूट पड़ती है। हमारी आँख लाखों रंगों को पहचानने में सक्षम होती हैं। नाक हजारों तरह की गन्ध और कान हजारों प्रकार की आवाज पहचानने में सक्षम हैं। हमारे शरीर की लाखों कोशिकाएँ अपना–अपना काम खूबसूरती से निपटाती हैं। चौबीसों घण्टे चलने वाले इस कारखाने के सभी काम बिना किसी रुकावट के करती रहती हैं। पूरे शरीर की रक्त– वाहिनियों की लम्बाई लगभग–96,558 किलोमीटर होती है। रक्त–वाहिनियों में रक्त की गति 35 किलोमीटर प्रति घण्टा होती है। सबसे ज्यादा जीने वाली कोशिकाएँ मस्तिष्क की होती हैं, जो आजीवन जीवित रहती हैं। अस्थियों के भीतर मज्जा में बनने वाली लिम्फोसाइट और अन्य तरह की श्वेत कणिकाएँ हमारे शरीर में अच्छे पहरेदार की तरह 24 घण्टे गश्त लगाती रहती हैं। प्रकृति ने कान को सुनने और शरीर का सन्तुलन बनाने का काम सौंपा है। कान की स्टेपीस नाम की हड्डी शरीर की सबसे छोटी हड्डी होती है। त्वचा की सबसे पतली परत पलकों पर होती है, जबकि पैर के तलवों तथा एड़ी पर सबसे मोटी परत होती है। त्वचा में पाया जाने वाला मेलेनिन नामक रंग कण हमारी त्वचा का रंग निर्धारित करता है। ये कण यदि अधिक मात्रा में फैले हों, तो रंग गेहुँआ या काला होता है। यदि ये फैले हुए न होकर केन्द्र में झुण्ड के रूप में हों, तो त्वचा का रंग गोरा होता है। हमारे शरीर में आँखों का स्थान महत्त्वपूर्ण है। स्वस्थ आँखों से हम अनुपम तथा प्राकृतिक सुन्दरता को देख सकते हैं। हम चाहे सोये हुए हों या जागे हुए, हमारे शरीर में लगातार कई गतिविधियाँ बिना रुके चलती रहती हैं।

–राजेन्द्रसिंह यादव
(सहा.शिक्षक)

माह-अगस्त-सितम्बर में जन्मदिन वाले सभी विद्यार्थियों को विद्यालय-परिवार का शुभाशीष!

स्कूल इन्फो

नवांकुर के 6 स्काउट्स महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मानित

भोपाल के गाँधी नगर में दिनांक 02.05.13 से 06.05.13 तक स्काउट गाइड राज्य स्तरीय राज्यपाल जाँच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें भोपाल से कुल 27 स्काउट्स ने हिस्सा लिया, जिनमें नवांकुर विद्यापीठ के 6 स्काउट्स सम्मिलित थे। सम्मिलित स्काउट्स में शिवा राजपूत पुत्र श्री पहलवानसिंह राजपूत कक्षा–11, यशपाल रघुवंशी पुत्र श्री राजकुमार रघुवंशी कक्षा–11 श्रवण मैना पुत्र श्री महाराजसिंह मैना कक्षा–12, सौरभ शर्मा पुत्र श्री जगदीशबाबू शर्मा कक्षा–12, दर्शन लाहौरी पुत्र श्री केशव लाहौरी कक्षा–12 तथा शुभम नामदेव पुत्र श्री मोहनबाबू नामदेव कक्षा–12 के नाम शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि नवांकुर के इन छः स्काउट्स ने सम्पूर्ण भोपाल सम्भाग का प्रतिनिधित्व किया था। इन्होंने प्रवेश से लेकर प्रथम, द्वितीय, तृतीय सोपान एवं राज्यपाल–पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण जाँच–शिविर में हिस्सा लिया। ये स्काउट्स राज्यपाल जाँच–शिविर में उत्तीर्ण होने पर राष्ट्रपति–पुरस्कार के लिए आवेदन करने की योग्यता हासिल कर लेगें।

इसके पूर्व में भी नवांकुर विद्यापीठ के चार स्काउट्स राष्ट्रपति–पुरस्कार एवं छः स्काउट्स राज्यपाल–पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

इस उपलब्धि के लिए सभी स्काउट्स एवं स्काउट प्रभारी श्री रामबाबू पांचाल को बधाई!

नवांकुर संगीत–विद्यालय में छात्रों ने दिखाया स्वरों का जादू

नवांकुर संगीत–विद्यालय में दिनांक 27.05.13 को संगीत की प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न हुई। इस परीक्षा में प्रथम वर्ष से लेकर चतुर्थ वर्ष तक के संगीत के 84 छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए, जिनमें 65 छात्र गायन तथा 19 छात्र तबला–वादन से सम्बन्धित थे। यह परीक्षा प्रयाग संगीत–समिति, इलाहाबाद द्वारा नियुक्त श्री ओमदत्त आर्य, भातखण्डे संगीत–विद्यालय, सखीपुरा उज्जैन (म.प्र.) के कुशल मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई।

इस प्रायोगिक परीक्षा में प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष तक के छात्र–छात्राओं ने राग विहाग, भैरव, भूपाली, देश, आसावरी, भैरवी, पीलू, केदार, तिलंग एवं चतुर्थ वर्ष से षष्ठ (प्रभाकर) वर्ष के छात्रों ने राग जयवन्ती, देशकार, पूर्वी, दरबारी, तोड़ी, वागेश्वरी, शुद्ध कल्याण, देशी, भैरवी एवं पीलू में ठुमरी एवं अन्य रागों में बड़े खयाल, छोटे खयाल, ध्रुपद, धमार, चतुरंग, त्रिवट, तराना आदि की प्रस्तुति दी।

तबला में प्रथम वर्ष से षष्ठ (प्रभाकर) वर्ष तक के छात्रों ने तीन ताल में कायदे–पलटे, टुकड़े, पेशकार, परन एवं कहरवा, दादरा, झपताल, एकताल, चौताल, रूपक, अद्दा, ताल आदि तालों से तबले पर शानदार प्रदर्शन किया तथा दीपचन्दी, धमार, सूलताल, आड़ा, चारताल बजाया। इसके साथ ही हाथ पर ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन आदि को ताली देकर बताया।

इस अवसर पर विद्यालय के संगीत–शिक्षक श्री रामकिशन राठौर और वरिष्ठ आचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले ने भरपूर सहयोग प्रदान किया।

ग्रीष्मकालीन गीत–नृत्य एवं नाटक कार्यशाला का आयोजन

विद्यालय में दिनांक 07.05.13 से 15.05.13 तक नौ दिवसीय गीत–नृत्य एवं नाटक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें नवांकुर एवं डॉल्फिन के लगभग 100 छात्र–छात्राओं ने गीत–नृत्य एवं नाटक का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यशाला में मुम्बई से पधारे श्री योगेन्द्र सिंह राजपूत ने छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षण दिया। श्री राजपूत मुम्बई में **''योगी डांस अकादमी, द स्कूल ऑफ परफार्मिंग आर्ट''**के नाम से निजी अकादमी चलाते हैं तथा MKVVIV International School में भी प्रशिक्षण देते हैं। इस कार्यशाला में छात्र–छात्राओं को लावणी, गौंधळ (महाराष्ट्र), करगट्टम (तमिलनाडु), सन्थाली (म.प्र.), बिहार, पं.बंगाल के जनजातीय क्षेत्रों में), नारी–उत्पीड़न से सम्बन्धित नुक्कड़ नाटक, मुम्बई लोकल ट्रेन के माध्यम से प्रदर्शित भारत की एकता (नाटक) तथा शिक्षकों को समर्पित **''यू हेव मेड डिफरेंस''** (गीत) का प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण शिविर में श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले, कु. वन्दना भार्गव, कु. माधुरी भदौरिया, श्री रामकिशन राठौर एवं श्री मुकेश शर्मा ने सहयोग प्रदान किया।

स्वतन्त्रता–दिवस पर कार्यक्रमों का भव्य आयोजन

विद्यालय में स्वतन्त्रता की 67वीं वर्षगाँठ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित ने ध्वजारोहण किया। छात्र–छात्राओं द्वारा राष्ट्रगान, मध्यप्रदेश–गान का गायन किया गया, तत्पश्चात् छात्र–छात्राओं द्वारा रंग–बिरंगे सांस्कृतिक कार्यक्रमों को पेश किया गया तथा डॉल्फिन की छात्राओं ने विद्यालय के नये गणवेश में ''वन्दे मातरम्'' गीत पर आधारित मनमोहक नृत्य पेश किया। इस दौरान श्रीमती श्रद्धा टिल्लू द्वारा दिये जाने वाले श्रद्धा–पुरस्कार के अन्तर्गत कु. मनीषा शर्मा पुत्री श्री बालाराम शर्मा को कक्षा–8 में 98.71 प्रतिशत अंकों के साथ बालिकाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर तथा कु. आकांक्षा बघेल पुत्री श्री गोविन्दसिंह बघेल को कक्षा–10 में 90.5 प्रतिशत

अंकों के साथ बालिकाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एक–एक हजार रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी क्रम में स्व. लक्ष्मीनारायण खन्ना की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी खन्ना द्वारा शुभम आचवल पुत्र स्व. सन्तोष राव आचवल को कक्षा–10 (93%)में तथा नीलेश कुमार सैनी पुत्र श्री ओमप्रकाश सैनी को कक्षा–12 (91.4%) में विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर ग्यारह–2 सौ रुपये का नकद पुरस्कार (मैरिट–अवार्ड) प्रदान किया गया।

इसी प्रकार नवांकुर बालिका–सेवा–योजना इकाई –प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव ने आगामी सत्र में कक्षा–10 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्रा को 1100/– रुपये का ''शिरोमणि पुरस्कार'' प्रदान करने की घोषणा की है। विद्यालय के आचार्य आशीष त्रिवेदी ने वर्तमान सत्र में सर्वाधिक प्रतियोगिताओं में विजेता होने वाले छात्र–छात्राओं को 5000/– रुपये का "Student of year" पुरस्कार तथा सर्वाधिक प्रतियोगिताओं में भागीदारी करने वाले छात्र–छात्रा को 1000/– रुपये का ''हेमलता पुरस्कार'' देने की घोषणा की है। कार्यक्रम के अन्त में मिष्ठान्न वितरित किया गया।

चित्रकला-प्रतियोगिता का आयोजन

मैत्री महिला–संगठन द्वारा नगर में 'पर्यावरण' विषय पर चित्रकला–प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें नवांकुर एवं डॉल्फिन विद्यालय से 109 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

किसी एक विद्यालय से भाग लेने वाले प्रतियोगियों की यह सर्वाधिक संख्या रही, इसके लिए विद्यालय को पुरस्कृत किया गया।

प्रतियोगिता में कक्षा–9 की छात्रा कु. सोनम पन्थी ने नगर में प्रथम एवं कक्षा–12 की छात्रा कु. शिवानी आचवल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में एक लकी ड्रॉ भी निकाला गया, जिसमें डॉल्फिन ने कक्षा–6 के चन्द्रम जयस्वाल ने स्थान प्राप्त कर पुरस्कार प्राप्त किया।

केदारनाथ के आपदा-पीड़ितों को सहायता

पिछड़े दिनों उत्तराखण्ड के केदारनाथ घाटी क्षेत्र में प्रकृति की भीषण विनाश–लीला देखने को मिली। इस प्रकोप में करोड़ों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई एवं हजारों लोग बेसहारा हो गये एवं हजारों ने अपने प्राण गँवा दिये।

केदारनाथ क्षेत्र में सहायता हेतु पूरे देश के नागरिकों, राज्य–सरकारों एवं संगठनों ने अपना आर्थिक–सहयोग दिया। विद्यालय–परिवार ने सहयोग हेतु 21000 रुपये का चैक कलेक्टर महोदय को सौंपा।

बुद्धिमानों के शत्रु नहीं होते।–**चाणक्य** (संकलनकर्ता–**अभिषेक दाँगी कक्षा–12(वाणिज्य)**

नवांकुर के संयोजन में हुआ सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

विद्यालय–प्रांगण में सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता का भव्य शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ सरस्वती–पूजन एवं सरस्वती–वन्दना के सामूहिक गायन से हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी श्री कपिल गौड़ ने मुख्य अतिथि विधायक, **श्री हरिसिंह जी रघुवंशी** का, क्रीड़ा–अधिकारी श्री विजय कुमार शर्मा ने, **नगरपालिका अध्यक्ष श्री मोहन जी भावसार** का, राज्य व राष्ट्र–स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र–रवि कुशवाह, विशाल रघुवंशी और कु. निधि शर्मा ने विशेष अतिथि, विधायक–प्रतिनिधि श्री गोविन्द पटेल, जिला क्रीड़ा–अधिकारी श्री विनोद चौधरी, विकासखण्ड–शिक्षा–अधिकारी श्री गिरीश मिश्रा, नगर के पीटीआई श्री प्रहलादसिंह ठाकुर, श्री प्रतापसिंह रघुवंशी और रिटायर्ड पीटीआई श्री एनआर पाल का स्वागत किया।

विधायक महोदय ने बाहर से पधारे सभी क्रीड़ा–अधिकारियों का स्वागत किया। विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित ने इस अवसर पर कहा कि ''खिलाड़ी खेल–भावना से खेलें और खेल का आनन्द लें।'' कपिल शर्मा ने गंजबासौदा नगर एवं जिले की ओर से सभी अतिथियों तथा प्रतिभागी खिलाड़ियों का स्वागत किया। इस अवसर पर कक्षा–2 के छात्र सुमन माँझी तथा कक्षा–6 के छात्र हर्ष माँझी ने योग– प्रस्तुति द्वारा अतिथियों का अभिनन्दन किया। सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता प्रारम्भ होने के प्रतीक –ध्वज का मुख्य अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भागीदारी करने वाले छात्र–सौरभ बघेल ने प्रतियोगी सभी खिलाड़ियों को शपथ दिलवायी एवं डॉल्फिन के छात्र मयंक भार्गव ने ''चिट्ठी आयी है'' गजल का गायन किया तथा डॉल्फिन की ही छात्राओं द्वारा ''वन्दे मातरम्'' गीत पर आधारित समूह नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विकासखण्ड शिक्षा–अधिकारी श्री गिरीश मिश्रा ने खिलाड़ियों को आशीर्वाद और शुभकामनाएँ दीं। जिला क्रीड़ा–अधिकारी श्री विनोद चौधरी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जिले के 64 विद्यार्थियों ने गत वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी की थी। गोविन्द पटेल ने अपने सम्बोधन में कहा कि नवांकुर के कारण आज पूरे मध्यप्रदेश व देश में बासौदा को पहचाना जाता है। विभिन्न खेलों तथा प्रतियोगिताओं में नवांकुर के विद्यार्थियों द्वारा राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी की जा रही है। मुख्य अतिथि, श्री हरिसिंह जी रघुवंशी ने अपने उद्‌बोधन में सम्भाग–स्तरीय–आयोजन के लिए नवांकुर की तारीफ

करते हुए जीवन में खेलों के महत्त्व को बताया और कहा प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती, प्रतिभा को तराशा जाता है। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री मोहन भावसार ने अपने उद्‌बोधन में नवांकुर के प्रयास की सराहना करते हुए सभी खिलाड़ियों को बधाई दी और नगर–पालिका द्वारा आवश्यकता पड़ने पर सभी सुविधाएँ प्रदान करने की घोषणा भी की। उद्‌घाटन–मैच विदिशा और सीहोर जिले के बीच खेला गया।

विद्यालय के संयोजन में आयोजित त्रिदिवसीय

सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता के रंगारंग कार्यक्रम का समापन सभी फायनल मैच के आयोजन के साथ ही हुआ। इस अवसर पर विद्यालय के कक्षा–9 से 12 तक के सभी छात्र/छात्रा, बाहर के जिलों से पधारे अनेक क्रीड़ा–प्रभारी, अतिथिगण, प्रतिभागी–खिलाड़ी तथा विद्यालय–परिवार के सदस्य खेल प्रांगण में उपस्थित थे।

फायनल मुकाबले में मिनी वर्ग के बालक–वर्ग में विदिशा जिले के छात्रों ने रायसेन जिले को 7–2 से, बालिका वर्ग में सीहोर जिले ने रायसेन जिले को 8–4 से, जूनियर वर्ग के बालक–वर्ग में विदिशा जिले के छात्रों ने रायसेन को 7–2 से, बालिका–वर्ग में विदिशा जिले की छात्राओं ने रायसेन जिले को 6–4 से तथा सीनियर वर्ग के बालक–वर्ग में रायसने जिले के छात्रों ने सीहोर को 13–9 से तथा बालिका–वर्ग में विदिशा जिले की छात्राओं ने सीहोर को 10–3 से हराया,

विदिशा जिले ने इस सम्भाग–स्तरीय–प्रतियोगिता में 4 फायनल मैच जीतकर ओवर ऑल चैम्पियन होने का गौरव हासिल किया।

इस अवसर पर नवांकुर के प्राचार्य श्री **शैलेन्द्र कुमार दीक्षित** द्वारा सभी जिले की विजेता टीमों को ट्रॉफी तथा प्रमाण–पत्र व विदिशा जिले के खिलाड़ियों को चैम्पियन ट्रॉफी भी प्रदान की गयी। सम्पूर्ण आयोजन में विद्यालय के क्रीड़ा–प्रभारी श्री कपिल गौड़ और श्री विजय कुमार शर्मा ने अभूतपूर्व योगदान दिया। सभी अतिथियों ने उनके कार्य और व्यवहार की सराहना की। बाहर से पधारे अन्य जिलों के क्रीड़ा–प्रभारियों तथा खिलाड़ियों ने नवांकुर के संयोजन में आयोजित सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता के दौरान प्रदत्त सुविधाएँ–भोजन, पानी, आवास तथा नवांकुर के सदस्यों के मधुर व्यवहार के लिए विद्यालय–परिवार की प्रशंसा की और धन्यवाद दिया।

उल्लेखनीय है कि इस सम्पूर्ण आयोजन को सफल बनाने में नवांकुर की राष्ट्रीय सेवा–योजना इकाई के स्वयंसेवकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। रासेयो के 100 बालक/बालिका स्वयंसेवक रात–दिन लगभग 500 अतिथियों के सेवा–कार्य में संलग्न रहे। विद्यालय–परिवार ने इस सफल आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाली संस्थाओं शास. कन्या उ.मा.वि., शास. कन्या मण्डीशाला, शास. उत्कृष्ट उ.मा.वि. तथा सैण्ट एस.आर.एस. के प्रति तथा सम्पूर्ण नगर के लिए धन्यवाद दिया है।

समय ही धन है, इसका सदुपयोग करो, दुरुपयोग नहीं।

नवांकुर के संयोजन में हुआ सम्भाग–स्तरीय खो–खो–प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

मन्तव्य

जिला–राजगढ़

सम्भागीय खो–खो खेल–प्रतियोगिता, जो गंजबासौदा के नवांकुर उ.मा.विद्यालय में आयोजित की गयी, जिसमें उद्घाटन की मनमोहक प्रस्तुतियाँ खिलाड़ियों एवं व्यायाम–शिक्षकों के दिल को छू गयीं, वे सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं।

लगातार बारिश के बाद भी समय–समय पर उच्च–स्तरीय व्यवस्था कर खेल–मैदान को चलाया व समय पर श्री कपिल कुमार गौड़ ने प्राचार्य के मार्गदर्शन व सहयोगियों के साथ समय पर खेल–प्रतियोगिताएँ आयोजित करायीं।

इसी प्रकार खिलाड़ी छात्र/छात्राओं के लिए आवास –व्यवस्था में कोई कमी नहीं रखी। बच्चों को गद्दे से लेकर अन्य सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायीं व छात्राएँ जहाँ रुकी थीं, वहाँ प्राचार्य के साथ श्री कपिल ने पुलिस स्टॉफ के साथ गश्त की एवं जानकारी लेते रहे। इसकी भी सराहना की जायेगी कि सभी खिलाड़ियों के लिए जो भोजन–व्यवस्था की गयी, उसकी जितनी सराहना की जाये, वह कम है। इससे छात्र/छात्राओं को इधर–उधर भटकना नहीं पड़ा। इसके लिए हम यहाँ के प्राचार्य के साथ समस्त स्टॉफ के आभारी हैं।

शुभकामनाओं सहित!

–पी.एन साहू (व्या.–शि. राजगढ़)

–प्रकाश सिंह तोमर (व्या.–शि. राजगढ़)

जिला–भोपाल

सम्भागीय शालेय–क्रीड़ा–प्रतियोगिता 2013–14 के अन्तर्गत खो–खो बालक एवं बालिका (14, 17,19 वर्ष) नवांकुर उ.मा.वि., गंजबासौदा के तत्त्वावधान में आयोजित की गयी। यह प्रतियोगिता दिनांक 18.08.13 से 20.08.13 के मध्य आयोजित हुई।

प्रतियोगिता बिल्कुल शान्त एवं सराहनीय माहौल में सम्पन्न हुई। विशेष रूप से भोजन–व्यवस्था प्रशंसनीय रही एवं समस्त प्रतियोगियों को समय पर भोजन एवं नाश्ता उपलब्ध कराया गया। भोजन शुद्ध–सात्विक एवं रुचिकर था। सारे प्रतियोगियों ने इसे सराहा।

–दिनेश कुमार टेलर
(प्रबन्धक, भोपाल जिला खो–खो दल)

–श्रीमती प्रतिमा तिवारी (व्या.शि., भोपाल)

–श्रीमती माया मालवीय (व्या.शि., भोपाल)

जिला–सीहोर

सम्भागीय खो–खो प्रतियोगिता का आयोजन नवांकुर उ.मा.विद्यालय, गंजबासौदा में हुआ।

प्रतियोगिता का पूर्ण आयोजन अति उत्तम रहा। आवास–व्यवस्था, भोजन–व्यवस्था, मैदान–व्यवस्था बहुत अच्छी थी। साथ ही, में नवांकुर विद्यालय के पूरे स्टॉफ एवं प्राचार्य तथा विशेष रूप से व्यायाम शिक्षकों का योगदान भी यादगार रहेगा।

मैं नवांकुर विद्यालय को इस शानदार आयोजन के लिए बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ तथा इस विद्यालय एवं उसके–परिवार को भी सीहोर जिला की तरफ से आभार व्यक्त करता हूँ। जय हिन्द!

–नीलमणि सिंह सेंगर (जनरल मैनेजर, सीहोर)

जिला–रायसेन

सम्भागीय खो–खो प्रतियोगिता का आयोजन नवांकुर उ.मा.वि., गंजबासौदा में दिनांक 18.08.13 से 20.08.13 तक सम्पन्न हुआ।

प्रतियोगिता सराहनीय रही। प्रतियोगिता में बालक/बालिकाओं के भोजन, आवास की व्यवस्था सराहनीय है।

–राजेश सक्सेना (जन. मैनेजर, रायसेन)

–कपिलदेव सिंह मण्डीदीप

सुनील भावसार, उ.श्रे.शि. (सूचना व प्रसारण प्रभारी)

कक्षावार मेरिट-सूची वर्ष -2013

कक्षा-12 (वाणिज्य)

नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
कु. आयुषी जैन	श्री राकेश जैन	433/500	86.60%	प्रथम
कु. कृतिका नेमा	श्री विनोद कुमार नेमा	404/500	80.80%	द्वितीय
कु. संगम रघुवंशी	श्री गजराजसिंह	390/500	78%	तृतीय

कक्षा-12 (जीव-विज्ञान)

नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
कु. प्रीति दाँगी	श्री कलेक्टर सिंह दाँगी	423/500	84.60%	प्रथम
कु. मानसी गुप्ता	श्री अरविन्द गुप्ता	414/500	82.80%	द्वितीय
कु. आयुषी शर्मा	श्री मनोज शर्मा	407/500	81.40%	तृतीय
रवि मैना	श्री रामदयाल मैना	407/500	81.40%	तृतीय

कक्षा-12 (गणित)

नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
नीलेश सैनी	श्री ओमप्रकाश सैनी	457/500	91.4%	प्रथम
ऋषभ दुबे	श्री घनश्याममुरारी दुबे	449/500	89.80%	द्वितीय
सौरभ रघुवंशी	श्री अशोक सिंह रघुवंशी	443/500	88.60%	तृतीय

कक्षा-10

नाम	पिता का नाम	प्राप्तांक	प्रतिशत	स्थान
शुभम आचवल	श्री सन्तोष आचवल	558/600	93%	प्रथम
योगेन्द्र सिंह राजपूत	श्री मलखानसिंह	549/600	91.50%	द्वितीय
कु. आकांक्षा बघेल	श्री गोविन्द सिंह	543/600	90.50%	तृतीय
शुभम शर्मा	श्री बृजेश शर्मा	542/600	90.30%	चतुर्थ
कु. अंजलि ठाकुर	श्री वीरेन्द्र ठाकुर	540/600	90.0%	पंचम

''मुनिश्री तरुण सागर जी के आशीष वचन''

''अगर आप विद्यार्थी हैं, तो मेरी एक नसीहत ध्यान में रखिये। दसवीं और बारहवीं कक्षा के इन सालों में सोईये मत। रात–दिन पढ़िये, क्योंकि यही दो साल हैं, जहाँ से कैरियर बनता है। यदि ये दो साल सोने में निकाल दिये, तो फिर जिन्दगी–भर जागना–ही–जागना है। कारण यह है कि गधा–मजूरी करके जीवन गुजारना होगा और यदि इन सालों में जागकर कठोर परिश्रम करके अध्ययन में सफलता अर्जित कर ली, तो फिर जीवन आराम से गुजारना है।''

इस सत्र के मेरिट–कार्ड्स

हमारे इस वर्ष के मेरिट–कार्ड में आप प्रत्येक मास से सम्बन्धित जानकारी हासिल कर सकेंगे। प्रत्येक माह को यह नाम क्यों दिया गया, इसका अन्य सभ्यताओं के केलेण्डर से क्या सम्बन्ध है। यह जानने के लिए अवलोकन करते हैं। इस वर्ष के मेरिट–कार्ड का :–

जनवरी:–जनवरी हमारे केलेण्डर का प्रथम मास है। यह रोमन केलेण्डर का 11 वाँ महीना है। इस माह का नाम ग्रीक देवता, 'Janus' के नाम पर पड़ा, जिसका अर्थ है– 'प्रवेश–द्वार'।

फरवरी:–यह हमारे केलेण्डर का द्वितीय मास है। यह रोमन–केलेण्डर का 12 वाँ महीना माना जाता है। फरवरी मास का नाम ग्रीक शब्द 'Februa' के नाम पर पड़ा, जिसका अर्थ है– स्वच्छता व शुद्धता।

मार्च:– यह हमारे केलेण्डर का तृतीय मास है। वास्तव में यह महीना रोमन–केलेण्डर का प्रथम मास है। इस मास का नाम रोमन–देवता 'martius' के नाम पर पड़ा।

अप्रैल:–यह हमारे केलेण्डर का चतुर्थ मास है, जबकि रोमन–केलेण्डर का द्वितीय मास है। अप्रैल शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'aperire' से हुई है, जिसका अर्थ है– खुलना।

मई :– मई हमारे केलेण्डर का पाँचवाँ, जबकि रोमन –केलेण्डर का तृतीय मास है। मई का नाम ग्रीक–देवी 'may' के नाम पर पड़ा।

जून :– जून हमारे केलेण्डर का षष्ठ मास है। यह रोमन –केलेण्डर का चौथा महीना माना जाता है। इस मास का नाम रोमन–देवी 'Junno' के नाम पर पड़ा, जिन्हें 'Goddess of marrige' कहा जाता था।

जुलाई :–जुलाई हमारे केलेण्डर का सप्तम् मास है। यह रोमन–केलेण्डर का पाँचवा महीना कहा जाता है। Julius (july) का यह नाम julius caesar को सम्मान देने के लिए रखा गया, जिनका जन्म 12 जुलाई को हुआ।

अगस्त :–यह हमारे केलेण्डर का अष्टम् मास है। यह रोमन–केलेण्डर का छठवाँ महीना कहा जाता है। इस मास का नाम रोमन–सम्राट 'Augustas casesar' के

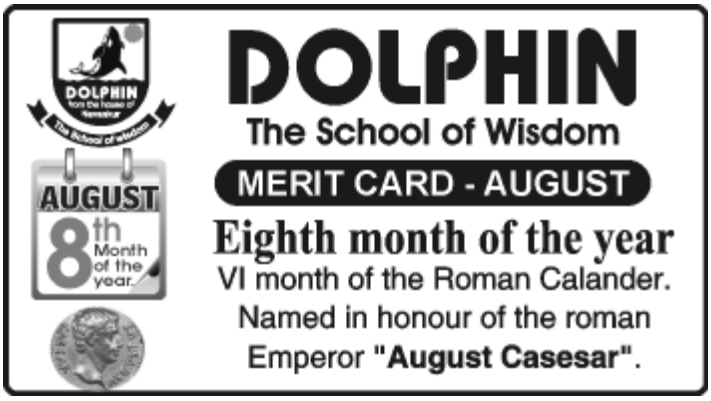

सितम्बर :–यह हमारे केलेण्डर का नौवाँ, जबकि रोमन –केलेण्डर का सातवाँ महीना है। इस मास का नाम रोमन शब्द 'septem' के आधार पर रखा गया, जिसका अर्थ है–seven अर्थात् सात।

अक्टूबर :–अक्टूबर हमारे केलेण्डर का दसवाँ, जबकि रोमन–केलेण्डर का आठवाँ महीना माना जाता है। 'Octo' रोमन भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ है– आठ।

नवम्बर :–नवम्बर को हमारे केलेण्डर का ग्यारहवाँ महीना माना जाता है। रोमन–केलेण्डर में यह वर्ष का नवाँ महीना माना जाता है। 'November' शब्द की उत्पत्ति रोमन शब्द 'Novem' से हुई है, जिसका अर्थ है– 'Nine' अर्थात् नौ।

दिसम्बर :–यह हमारे केलेण्डर का बारहवाँ महीना है। इसे रोमन–केलेण्डर का दसवाँ महीना माना जाता है। 'December' रोमन शब्द 'Decem' से आया है जिसका अर्थ है– Ten. इसे जाड़े का महीना भी कहा जाता है।

–सन्दीप रावत (व्या.रसायनशास्त्र)

मनुष्य की अच्छी सोच ही, मनुष्य को सफल बनाती है। (संकलन–**जयश्री लोधी,कक्षा–12(गणित)**

शिक्षक की कलम

सफलता का मूल मन्त्र

प्रिय बच्चो, यदि आप किसी प्रयास में असफल हो जाते हैं, तो कृपया हार मानकर न बैठें, बल्कि यह याद रखें कि असफलता यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयास पूरे मन एवं श्रम से नहीं किया गया, लेकिन इस सफलता को जीवन का अन्तिम सत्य न मानते हुए दोबारा सच्चे दिल से यदि पुनः प्रयत्न किया जाये, तो सफलता अवश्य ही आपके कदम चूमेगी। ये बात इन महान् आविष्कारकर्त्ताओं के कार्यों को पढ़कर समझी जा सकती है, जिन्होंने अपने लक्ष्य को जब तक प्राप्त नहीं कर लिया, तब तक हार नहीं मानी। उनकी इन बातों से हमें सबक लेना चाहिए।

1. थॉमस एल्वा एडीसन ने 9999 बार बल्ब के आविष्कार का प्रयास किया, तब जाकर वे सफल हुए।

2. अब्राहम लिंकन 11 बार राष्ट्रपति पद के लिए असफल हुए, इसके बाद ही उन्हें सफलता मिली।

3. स्टीवन स्पीलबर्ग को यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया ने 3 बार रिजेक्ट किया, इसके बाद ये डायरेक्टर बनें।

4. नेशनल जियोग्राफिक के फोटोग्राफ में 400 बार क्लिक करना पड़ता है, तब उसे एक फायनल इमेज मिल पाती है। अब तो आप समझ ही चुके होंगे कि हमें किसी कार्य के प्रयास को रोकना नहीं चाहिये, क्योंकि किसी शायर ने क्या खूब कहा है–

गिरते है शह सवार ही मैदाने जंग में,
वह क्या गिरे तिफ्ल जो घुटने के बल चले।''

–श्रीमती रेणु श्रीवास्तव
(उ.श्रे.शि.)

सुन्दर वह, जो सुन्दर कार्य करे

एक बार राजा विक्रमादित्य और महान् कवि कालिदास दोनों उद्यान में भ्रमण कर रहे थे। विक्रमादित्य कालिदास से बोले–''कविवर, आप कितने प्रतिभाशाली और मेधावी हैं, परन्तु भगवान् ने न जाने क्या सोचकर आपका शरीर सुन्दर नहीं बनाया। आपकी अनुपम बुद्धि की तुलना में तो यह कुरूप लगता है।'' कालिदास व्यवहार कुशल तो थे ही, किन्तु–परन्तु में प्रश्न का उत्तर देना ठीक नहीं समझा।

राजमहल में आकर उन्होंने दो कलश मँगवाये। एक मिट्टी का और दूसरा सोने का। दोनों में जल भर दिया। कुछ समय पश्चात् कालिदास ने विक्रमादित्य से पूछा– ''राजन्! दोनों पात्रों का जल चखकर देखिये। किस पात्र का जल अधिक शीतल है?'' दोनों से एक–एक घूँट पीकर विक्रमादित्य ने कहा– '' निश्चय ही मिट्टी के पात्र का।'' तब मुस्कुराते हुए कालिदास बोले– '' जिस प्रकार शीतलता पात्र के बाहरी आवरण पर निर्भर नहीं करती है, उसी प्रकार राजन् प्रतिभा भी शरीर की आकृति पर निर्भर नहीं रहती। इसका सम्बन्ध आत्मा से है।'' यह सुनकर राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने कालिदास की महानता और बुद्धि को प्रणाम किया। अतः सुन्दर वही है जो सुन्दर कार्य करता है।

–यतेन्द्र बड़ोनिया (शिक्षक नवांकुर)

STUDENT

यदि किसी से पूछा जाये कि विद्यार्थी किसे कहते हैं, तो वह शीघ्र ही उत्तर देगा कि ''जो अध्ययन करता है, उसे विद्यार्थी कहा जाता है'', लेकिन यह गलत है। यह तब तक गलत है, जब तक विद्यार्थी अर्थात् Student शब्द के निम्नलिखित गुण विद्यमान न हों–

Student शब्द का पहला अक्षर–S है जो Strength या शक्ति का सूचक है। अध्ययन के साथ–साथ विद्यार्थी में

बल होना भी आवश्यक है।

दूसरा अक्षर–T है, जो Tolerance या सहनशीलता का सूचक है। सहनशीलता हमें भविष्य की प्रतिकूल परिस्थितियों को हँसकर व प्रसन्नता से स्वीकार करना सिखाती है।

तीसरा अक्षर–U है, जो unity अर्थात् एकता का सूचक है। छात्र–जीवन में एकता होना बहुत जरूरी है, क्योंकि एकता द्वारा ही हम उन्नति के चरम पर पहुँच सकते हैं।

चौथा अक्षर–D है, जो Discipline अर्थात् अनुशासन का सूचक है। बिना अनुशासन जीवन में सफलता अर्जित नहीं की जा सकती है।

पाँचवा अक्षर–E है, जो Ego अर्थात् अहं को दर्शाता है। हमें छात्र–जीवन में अहंकारी नहीं बनना चाहिये।

छठवाँ अक्षर–N है, जो Narrow mindness अर्थात् संकीर्ण दृष्टिकोण का सूचक है। यह जीवन में उन्नति का बाधक है।

सातवाँ अक्षर–T है, जो Tidy अर्थात् साफ–सुधरे अध्ययन के लिए हमारे शरीर एवं मन दोनों की शुद्धता के लिए आवश्यक है।

–यतेन्द्र बड़ोनिया (शिक्षक नवांकुर)

मेरा ननिहाल

वो बरगद का पेड़,
वो नीम की निबोरी।
वो चलती हुई लू,
वो जून की दुपहरी।
ना खाने की सुध,
ना पीने का खयाल।
खो जाते थे मस्ती में,
जब जाते हम ननिहाल।
बीत गये वो दिन अब सारे,
यादें रह गयीं बस पास हमारे।
अब ना मिलती है फुरसत किसी को,
जो वापस लौटाये वो पल।
रह गयी हैं बस अठखेलियाँ,
जो ले आती हैं नैनों में जल।

–श्रीमती इन्दु मिश्रा (सहा.शिक्षिका)डॉल्फिन

''उत्तराखण्ड में तबाही''

जिन्दगी की भाग–दौड़ में भूल गये थे,
जिस भगवान् को मनाने,
चले थे लोग चार धाम की यात्रा पे, अपने पाप मिटाने।
मना रहे थे खुशियाँ पहुँच कर ईश्वर के दर पे,
आयी अचानक विपदा सब भक्तों के सर पे।
प्रकृति ने ये कैसा अपना रोष दिखाया,
हर आसरा जीवन का पानी में डुबाया।
न बची मन्दिरों की सीढ़ियाँ, न घरों की निशानी,
कैसी रची समय ने उत्तराखण्ड की कहानी।
देखते–ही–देखते सब कुछ पानी में बह गया,
बाकी पीछे महा ज्योतिर्लिंग ही रह गया।
कहीं ममता का साया छूटा, कहीं पिता का संग,
कैसा दिखाया प्रकृति ने अपना रौद्र रंग।
खोज रहे लोग अपनों को,
लिए दिल में डर और आँखों में पानी,
बिछड़े हुए अपनों की मिल जाये कोई निशानी।
जहाँ देखो वहाँ हाहाकार था,
हर तरफ मृतक देहों का अम्बार था।
जहाँ करनी चाहिए थी इंसान को निःस्वार्थ सेवा,
वहाँ पर भी इंसान ने खाया स्वार्थी मेवा।
दो सौ रुपये का खाना था और सौ रुपये का पानी,
अपने घर वापस आने को तड़प रहे थे प्राणी।
कौन कहता है कि ये इंसानियत है,
ये तो बस इंसान की हैवानियत है।
ये सुनामी तो थी प्रकृति की मनुष्य से गुहार,
बन्द करो मानव अब तो प्रकृति से खिलवाड़।
अगर करना चाहते हो देश का विकास,
रोको जगह–जगह प्रकृति का विनाश।
जो करते हैं सदा प्रकृति का सत्कार,
उन्हीं को मिलता है, जीवन का सुन्दर उपहार।

कु. प्रीति चतुर्वेदी (व्याख्याता अंग्रेजी)

अतिथि-लेख

बासौदा का गौरव–गान

गंजबासौदा पावन नगरी,
शोभा अति अभिराम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित,
बसा हुआ यह धाम है।
पुरा सम्पदा–कला–धर्म के,
रूपक यहाँ तमाम हैं,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
अंग्रेजों के शासन में यह, ग्वालियर राज्य में आता था,
तब इसको शहजादपुर के, नाम से जाना जाता था।
कौरव–पाण्डव युद्ध के कुछ,
अवशेष मिले थे जब यहाँ पर,
नगर बदलकर नया नाम, हो गया तभी वासुदेव नगर।
गंज ग्राम सौदा बाजार से, गंजबासौदा नाम है।
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
ग्राम उदयपुर शिल्पकला की, पुरासम्पदा है सुन्दर,
सदी ग्यारवीं में निर्मित, यहाँ नीलकण्ठेश्वर का मन्दिर।
रूप बदलती प्रतिमा महामाया का मन्दिर पास में,
जीर्णोद्धार हुआ था, संवत्, उन्नीस सौ उनचास में।
सिकन्दर बादशाह ने जब यहाँ, माँ को किया प्रणाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
पद्मासन की मुद्रा में, सिरनोटा में बैठे हनुमान,
इकसठ फुट की प्रतिमा, भगवान् की लगती है आलीशान।
ग्राम मुरादपुर के हनुमान जी, संकट सबके हैं हरते,
एक पैर पाताल में उनका, पूर्ण मुरादें वे करते।
पचमा और पिथौली में भी, बालाजी का धाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
बेतवा तट पर नौलखी धाम की, शोभा अद्भुत प्यारी है,
साँई–मन्दिर और गमाकर, धाम की महिमा न्यारी है।
रामजानकी–काँच का मन्दिर, गौरव गाथा कहते हैं,
शहर के सिद्धेश्वर मन्दिर में, भोले बाबा रहते हैं।
शीतला शक्ति–धाम नगर का, गौरव है अभिमान है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
वीर सावरकर चौक पे, महलों वाले बाबा का दरबार,
और मकबरा मिर्जापुर में, करीमुल्लाशाह की दरगाह।
बरस आठ सौ पहिले के ये, निर्मित पावन स्मारक,
हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई, सबके ही सजदे लायक।
ईद–मुहर्रम–रोजों में यहाँ, आते कई इमाम हैं,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
सप्त जिनालय जैन धर्म के, आदर्शों को बतलाते,
पार्श्वनाथ और आदिनाथ प्रभु–दर्शन,
कर जन सुख पाते।
ऐलक श्री और मुनियों ने, सद्वचनों का उद्गार किया,
चैत्यालयों ने मानवता के, सपनों को साकार किया।
विद्यासागर द्वार अहिंसा का, देता पैगाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
सिक्ख–पन्थ के संस्थापक, श्री गुरुनानक का स्वयं रचित,
गुरुग्रन्थ साहिब है धरोहर, उनका यहाँ पे हस्तलिखित।
वीर सावरकर चौराहे की, कथा निराली बतलायी,
दामोदर के जीवित रहते, प्रतिमा उनकी लगवायी।
नगरी यह भामाशाहों से, गुलशन है गुलफाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
श्री शंकर दयाल शर्मा का, बचपन यहीं पे बीता था,
अटल बिहारी बाजपेयी को, सिक्कों से यहाँ तौला था।
कृषि–मण्डी उत्कृष्ट यहाँ की, राज्य में जानी जाती है,
जगन्नाथ की रथ यात्रा यहाँ, भव्य निकाली जाती है।
पत्थर–फर्शी के व्यापार में, नगर का ऊँचा नाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।
केवटन– पारासरी–खानवा, सिन्ध, बेतवा सरिताएँ
स्टेशन पर सुपरफास्ट, ट्रेनें भी आकर रुक जाएँ।
साम्प्रदायिक सद्भाव यहाँ का, दृश्य मनोरम दिखलाता,
धर्म–पन्थ से ऊपर उठकर, मानवता से है नाता।
विदिशा जिले के मालवांचल का,
नगर ये बहु–आयाम है,
वेत्रवती के तट पर स्थित, बसा हुआ यह धाम है।

–संजय श्रीवास्तव ''प्रज्ञा''
(अभिभावक व अध्यापक–शास.मा.वि.मलकपुर)

कैरियर

Find a career in Audiography

Generally, the fact is observed that in small cities and villages, nobody has any idea about the field of sound engineering and audiography. People have less knowledge about making a career in this interesting and entertaining field.

Who is sound engineer?

Sound engineer is the man, who deals with the various instruments and activities of the world, then the sound is analized by softwares and many audio clips are mixed together according to the requirement then all mixed clips are tested by testing engineer. So there are three categories of sound engineer:-

(1) Sound recordist
(2) Mixing engineer
(3) Testing engineer.

Who is eligible?

Anybody who is 12th passed, can go to the field of audiography. Candidate have to complete one year diploma of sound-engineering. There are some multimedia schools and acadmies, who provide the courses of audiography such as sound Ideaz academy Mumbai.

Where is the scope?

The large scale audiography is used in movie production houses, music recording companies event management organizations in all over India. But the scope and demand is continuously increasing in all the field of our daily life, just like radio-FM, disc-jocky, railway sound announcements, shopping malls, publicity, advertising etc.

Some top production companies are:- Sony music, T-series, EROS international, UTV motion picture, relience entertainment etc.

Salary packages:-

Basically, if we talk about the companies mentioned above, a sound recordist can earn of upto 50000 to 120000 rupees per month. A sound mixing engineer can earn upto 30000 to 70 000 rupees per month and a testing engineer can earn upto 15000-50000 rupees per month.

So get started with a search and proper guidance about audiography. All the best!!

-Ashish Trivedi (UDT)

स्वास्थ्य–ज्ञान

Healthy Living

कहीं दवा न बन जाये दर्द

1. **खाली पेट पेनकिलर्स न लें:–**ज्यादातर पेनकिलर्स को भोजन के बाद ही लेना चाहिये, क्योंकि कई पेनकिलर्स खाली पेट लेने से अल्सर या गैस की समस्या पैदा कर सकते हैं।

2. **खूब पियें पानी**:– यह सच है कि पेनकिलर्स दर्द से राहत दिलाते हैं, लेकिन इसके बाद कुछ टॉक्सिन शरीर से निकलते हैं। ऐसे में जरूरी है कि अधिक–से–अधिक पानी पियें, जिससे टॉक्सिन आसानी से शरीर से बाहर निकल जायेंगे।

3. **टेबलेट तोड़े नहीं**:–जब तक डॉक्टर आपको टेबलेट के डोज के बारे में न बतायें, अपनी मर्जी से उसे तोड़कर न खायें। इससे दवा की सही मात्रा का अन्दाज नहीं मिल पाता। हो सकता है, इससे दवा ओवरडोज हो जाये या कम डोज रह जाये।

4. **एक बार में एक ही**:–किसी पेनकिलर का असर 15 से 30 मिनट के बीच होता है, इसलिए एक बार में एक ही टेबलेट लें। दो या तीन लेने पर किडनी फैल होने पेट में ब्लीडिंग अन्य सामान्य या फिर स्ट्रोक का भी खतरा हो सकता है।

–सौरभसिंह पटेल, कक्षा–11(जीवविज्ञान)

शैफ

कुकिंग को यों तो लड़कि का काम माना जाता है, लेकि जैसे–जैसे समय बदलता गय लोगों की इस सोच में भी बदलाव आया। अब कुकिंग एक कला ही नहीं रह गयी, बल्कि इस क्षेत्र में काम करने वाले शैफ का भी सैलिब्रिटी बना सकती है। आज के दौर में जहाँ कुकिंग को महज फुरसत में वक्त बिताने का जरिया माना जाता है, वहीं जो इस काम में रुचि रखते हैं, वे अपनी मेहनत और रचनात्मकता से खाने वालों को उंगलियाँ चाटने पर मजबूर कर देते हैं।

इस क्षेत्र में सफलता के साथ स्टारडम हासिल करना कोई टेढ़ी खीर नहीं है। 'मास्टर शैफ ऑस्ट्रेलिया की तर्ज पर बने रियेलिटी शो 'मास्टर शैफ इण्डिया' के जरिये कई लोगों ने इस क्षेत्र में न केवल नाम कमाया, बल्कि कैरियर की नयी ऊँचाइयों को भी छुआ।

पिछले कुछ सालों को देखें, तो जिस तरह दुनिया में ग्लोबलाइजेशन हुआ, उसी तरह अब खाना भी ग्लोबल होता जा रहा है और यही कारण है कि प्रोफेशनल शैफ्स की माँग देश में ही नहीं, विदेशों में भी अच्छीखासी बढ़ गयी है।

योग्यता–न्यूनतम 12वीं पास

पाठ्यक्रमः– होटल मैनेजमैण्ट डिग्री (4 वर्षीय), डिप्लोमा कोर्स (3 वर्षीय), क्यूलिनरी आर्ट डिप्लोमा कोर्स (2 वर्षीय)

नोटः– इसके अलावा, इस क्षेत्र में सटिफिकेट कोर्स भी करवाये जाते हैं, जिनकी अवधि 6 महीने से 1 साल तक की होती है।

कोर्स–फीसः–60 हजार रुपये से लेकर 1,30,000रुपये तक।

शुरूआती वेतनः– 10 से 15 हजार रुपये।

संस्थानः– गुरु गोविन्दसिंह इन्द्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी, नयी दिल्ली, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमैण्ट, (ताज ग्रुप ऑफ हॉटल्स द्वारा संचालित) औरंगाबाद।

विज्ञापन कॉपीराइटर

एक जमाना था, जब टीवी पर विज्ञापन आते ही लोग चैनल बदल देते थे, पर अब स्थिति इसके विपरीत है। आज लोग बेसब्री से कुछ खास विज्ञापनों का इंतजार करते हैं और करें भी क्यों न, जब उनके म्यूजिक, डायलॉग, विजुअल इफैक्ट्स से सम्बन्धित हर चीज इतनी रोचक बन गयी है कि उन्हें नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। माना कि विज्ञापन के लिए कॉपीराइटिंग करना लेखन की दूसरी विधाओं से एकदम भिन्न है, लेकिन फिर भी इस का दायरा व्यापक है और इसमें सम्भावनाएँ बहुत हैं।

कॉपीराइटर का काम है, एक ब्राण्ड को उसकी टारगेट ऑडियंस तक पहुँचाना, जिसके लिए शब्दों की जादूगरी से उसे प्रोडक्ट की तमाम खूबियों को बहुत कम शब्दों में अभिव्यक्त करना होता है, ताकि लम्बे समय तक वे शब्द लोगों के जेहन में रहें, तभी तो ऐसे बहुत से विज्ञापन हैं, जिन्हें देखने व सुनने के लिए लोग बाकायदा इन्तजार करते हैं। इतना ही नहीं, उन के संवाद रोजमर्रा की जिन्दगी में दोहराते भी हैं। जैसे– कैडबरी चौकलेट का–''कुछ मीठा हो जाये।'' एरियल वॉशिंग पाउडर का– ''दाग ढूँढ़ते रह जाओगे'' आदि। इसलिए कॉपी लिखना अब बेहद चुनौतीपूर्ण काम बन गया है। अगर आप भी शब्दों की जादूगरी में माहिर हैं, तो इस क्षेत्र में तरक्की के लिए रास्ता खुला है।

योग्यताः–

स्नातक डिग्री (किसी विषय में)

शुरूआती सैलरीः–

10 हजार रुपये से लेकर लाखों रुपये तक

संस्थानः–

इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन, नयी दिल्ली, जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन, मुम्बई

–सुमन सौरभ के सौजन्य से
(नवांकुर–पुस्तकालय)

सच्चा आदर उन्हें ही मिलता है, जिन्होंने दूसरों का आदर किया है।

कैसे करें, परीक्षा की तैयारी

परीक्षा सिर्फ अच्छे अंक पा लेने का जरिया ही नहीं, बल्कि इससे विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व, पढ़ने की कला, सही योजना, समय–प्रबन्ध आदि की जाँच हो जाती है। अगर विद्यार्थी अपनी जीवनशैली, अपनी पढ़ाई के तौर–तरीके पर आलोचनात्मक नजर रखते हुए, खुद में सुधार करता रहे, तभी वह सही मायनों में शैक्षिक परीक्षा के साथ जिन्दगी की परीक्षा भी पास कर लेता है। विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निखारने की प्रक्रिया में अभिभावकों और शिक्षकों को भी मनावैज्ञानिक सोच रखते हुए, मौरल सपोर्ट देते रहना होगा, ताकि विद्यार्थी सहज रह कर अच्छी तरह परीक्षा की सम्पूर्ण तैयारी कर सके एवं उसे परीक्षा हौआ न लगे। परीक्षार्थी को भी कुछ खास बातों पर हमेशा अमल करना होगा।

1. यह ध्यान रखें कि परीक्षा आप का टेस्ट लेने की एक प्रक्रिया है, अतः सिर्फ अच्छे मार्क्स लाने का मकसद न रखें, बल्कि पूरे कोर्स को पढ़ें, अकसर छात्र कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को याद कर अच्छे अंक पा लेने की ख्वाहिश रखते हैं और इसमें सफल भी हो जाते हैं, लेकिन इससे उनकी विषय पर पूरी पकड़ नहीं बन पाती, जिसका उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। अतः, सत्र की शुरूआत से ही प्रश्नों के रट्टे न मार कर, पूरा पाठ पढ़ कर उसका सार समझें।
2. पढ़ाई की सही प्लानिंग एवं समय–प्रबन्धन का भी ख्याल रखें। हर विषय के लिए पर्याप्त समय सीमा निर्धारित कर लें, आप जिस विषय में कमजोर हों, उस पर थोड़ा ज्यादा समय एवं ध्यान दें।
3. हर बच्चे का दिमाग, बुद्धि एवं स्मरणशक्ति एक–सी नहीं होती, परन्तु शान्तचित्त एवं पूरे मनोयोग से की गयी पढ़ाई इस कमी को भी दूर कर सकती है। पीछे याद किये गये चैप्टर को बिल्कुल मत छोड़ें, उसे कुछ समय के अन्तराल पर रिवाइज करते रहें, किसी विषय, खासकर मुश्किल लगने वाले विषय के लिए, नियमित अभ्यास का समय निकालें। ऐसा करने से हर विषय पर आपकी पकड़ मजबूत बन जायेगी।
4. हरेक चैप्टर की रूपरेखा समझ कर उसे दिमाग में बैठा लें। कहीं कोई परेशानी आने पर अभिभावक या शिक्षक से मदद लें, पूरा चैप्टर समझ में आ जाने पर बाद में प्रश्नोत्तर आसानी से याद हो जायेंगे व समय भी कम लगेगा।
5. समय पर सारे नोट्स तैयार कर लें व उन्हें याद करना शुरू कर दें। परीक्षा से कुछ समय पहले नोट्स याद हो जाने चाहिये, ताकि परीक्षा के पहले रिवीजन में आप को परेशानी न आये।
6. सन्तुलित और पौष्टिक भोजन लें, स्वास्थ्य अच्छा रहने पर आप पढ़ाई के प्रति एकाग्रचित्त हो जायेंगे, लगातार ज्यादा देर तक पढ़ाई न करें, थक जाने पर कुछ देर के लिए दिमाग को फ्री रखें और अपनी पसन्द व रुचि के अनुसार कोई और काम करें, ऐसा करने पर जब आप दोबारा पढ़ने बैठेंगे, तो पढ़ाई में ज्यादा ध्यान लगा पायेंगे।
7. घर के टैन्शन से दूर रहें, अपने रिजल्ट के प्रति भरोसा रखें, नियमित और सही तरीके से पढ़ाई करें, सुबह पढ़ने की आदत डालें, इस समय वातावरण और मन शान्त होने के कारण पाठ अच्छी तरह याद होता है।

शिक्षकों के लिएः–

विद्यार्थी अच्छे मार्क्स लायें व विषय पर उनकी पकड़ मजबूत हो, इस के लिए सम्बन्धित शिक्षक को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये। कक्षा में किसी पाठ को पॉइण्ट टू पॉइण्ट पढ़ा कर और प्रश्नों के सिर्फ उत्तर लिखवा कर वे अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। उन्हें पूरे पाठ को सिलसिलेवार और विस्तार से विद्यार्थियों को समझाया होगा, सारे विद्यार्थी एक–से नहीं होते, इस का ध्यान रखते हुए, उन्हें कमजोर

विद्यार्थी के लिए अलग से भी समय देना चाहिये। पढ़ाते समय उन्हें विद्यार्थियों के मनोविज्ञान को समझ कर पूरे धैर्य से अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करना होगा।

अभिभावकों के लिएः–

अभिभावक सिर्फ अपने बच्चों पर धौंस जमा कर हमेशा पढ़ाई के लिए दबाव न डालें, वे दोस्ताना व्यवहार रखने की कोशिश करें। पारिवारिक तनाव से बच्चों को दूर रखने की कोशिश करें, ताकि वे पूरे मनोयोग से पढ़ाई में ध्यान लगा सकें। उनके खानपान का पूरा ध्यान रखें। याद रखें, एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। अकसर देखने में आता है कि परीक्षा में कम मार्क्स आने पर बच्चों को ही दोषी ठहराया जाता है, लेकिन अभिभावक स्वयं मूल्यांकन करें, तो खुद के व्यवहार में भी कमी अवश्य पायेंगे। अतः, बच्चों को समझें व उन की योग्यता, रुचि एवं सोच को समझते हुए अपना सहयोग दें।

इस तरह परीक्षा के ये तीनों आधार–स्तम्भ विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक अपनी–अपनी जिम्मेदारी को सही तरह से निभायेंगे, तभी परीक्षा सिर्फ जाँच का एक माध्यम न बन कर विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास का एक स्रोत बन सकेगी और परीक्षा का मुख्य उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

–सुमन सौरभ के सौजन्य से (नवांकुर–पुस्तकालय)

"तितली से भी प्यारी मैं"

पंख होते अगर तितली जैसे,
दूर गगन में उड़ जाती मैं।
हर उपवन में उड़कर जाती,
फूलों का रस ले आती मैं,
मम्मी–पापा की प्यारी,
तितली से भी प्यारी हूँ।
राज कुमारी से भी बढ़कर
उनकी राज दुलारी हूँ।

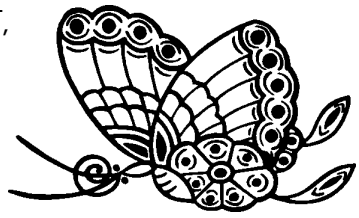

–कु. आराधना बघेल, कक्षा–3

पुस्तकालय प्रवेश सम्बन्धी नियम व शर्तें

1 पुस्तकालय का समय प्रातः 8:30 से 2.30 बजे तक।
2 पुस्तकें निश्चित अवधि के लिए निर्गम की जायेंगी, छात्र–छात्राओं को 5 दिन के लिए तथा शिक्षक–शिक्षिकाओं को 10 दिन के लिए।
3 कुछ कीमती पुस्तकें और सन्दर्भ–पुस्तकें और पत्रिकाओं को छोड़कर सभी पाठ्य पुस्तकें निर्गम की जायेगी।
4 पुस्तकों को पुनर्निगम उसी स्थिति में किया जायेगा, जब किसी अन्य पाठक द्वारा उसकी माँग न की गयी हो, पुस्तकों का आरक्षण भी किया जा सकता है।
5 यदि पुस्तकें निश्चित अवधि तक लौटकर नहीं आतीं, तो विलम्ब–शुल्क देना होगा। छात्र–छात्राओं को दो रुपया प्रतिदिन तथा शिक्षक–शिक्षिकाओं को पाँच रुपया प्रतिदिन विलम्ब–शुल्क देना होगा।
6 पुस्तकों की चोरी, पुस्तकों के चित्र अथवा पृष्ठ फाड़ने पर, दण्ड के रूप में उस पुस्तक की दो प्रतियाँ देनी होंगी या उन पुस्तकों की दुगनी कीमत अदा करनी होगी। छात्र–छात्राएँ पुस्तक लेते समय पुस्तक को अच्छी तरह देख लें कि वह कहीं से कटी–फटी न हो।
7 कक्षा 11 व 12 के लिए पुस्तकें जमा करने का दिन सोमवार व पुस्तकें निर्गम करने का दिन मंगलवार व बुधवार रहेगा। इसी तरह कक्षा 9 व 10 के लिए पुस्तकें जमा करने का दिन गुरुवार व निर्गम करने का दिन शुक्रवार व शनिवार रहेगा।
8 छात्र/छात्राओं को पुस्तक–निर्गम का समय 12:20 से 01:20 तक ही होगा।
9 01:20 से 02:20 तक वाचनालय में बैठकर पुस्तकें पढ़ने का समय रहेगा।
10. छात्र–छात्राओं से अपेक्षा है कि पुस्तकालय से दी गयी सुविधाओं का सदुपयोग करेंगे एवं शान्तिपूर्ण वातावरण बनाये रखेंगे।

पुस्तकालय प्रभारी–कु. अफसाना शेख

बच्चों की कलम

" Success is never ending failuar is never last"

यह बात 100 प्रतिशत सत्य है, जो व्यक्ति असफल हो चुके हैं। वे हमेशा असफल हों, यह आवश्यक नहीं है। सफलता मनुष्य के हाथों में निहित है। कुछ भाग्यवादी यह मानने से इंकार करते हैं और भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं। जबकि कहा तो ऐसा जाता है कि जो व्यक्ति निरन्तर प्रयास करता है। वह भाग्य की रेखाओं को भी परिवर्तित कर सकता है।

"Nothing is good or bad,
but our thinking making it so."

कभी–कभी हम अन्य व्यक्तियों के विचारों को अपनाकर अपना लक्ष्य परिवर्तित कर देते हैं, जो सर्वथा अनुचित है ऐसा नहीं कि हमें अन्य व्यक्तियों की बातों को नकार देना चाहिये, अपितु अपनी बात ओर अन्य व्यक्तियों की बातों को मिश्रित कर एक अन्य नये रास्ते को अपनाकर अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि यह अच्छा है या बुरा है, क्योंकि क्षेत्र कोई छोटा–सा या बड़ा नहीं होता।

"If you do hard work, you can succeed"

यदि हम अपना लक्ष्य निर्धारित कर लगातार प्रयत्नशील रहे, तो किसी लक्ष्य को पाना असम्भव नहीं होगा। एक सुप्रसिद्ध वाक्य में कहा गया है कि–'' बैठने वाले का भाग्य बैठ जाता है और चलने वाले का भाग्य चलने लगता है।

" Arise awake act till the goal is achieved"

सफलता परिश्रम की दासी है। यह परिश्रमी व्यक्ति के चरण चूमने को सदा तत्पर रहती है। विश्व में जितने भी व्यक्ति सफल हुए हैं, वह कठोर परिश्रमी व दृढ़संकल्पी थे। ''परिश्रम ही सफलता तक पहुँचने वाली सीढ़ी है, जो परिश्रम के वक्त इंकार करता है, वह जीवन में पिछड़ जाता है।

– अनुभव जैन, कक्षा–12 (वाणिज्य)

चाणक्य-नीति

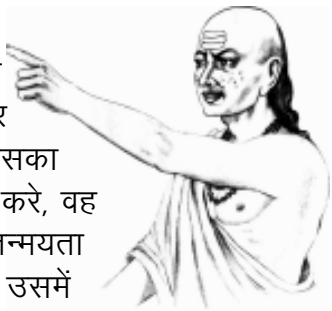

1. कार्य छोटा हो या बड़ा, उसे पूरी भक्ति लगाकर करना चाहिये जैसे सिंह अपने हर शिकार पर पूरी ताकत से झपटता है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति जो भी कार्य करे, वह छोटा हो या बड़ा, उसे पूरी तन्मयता के साथ करना चाहिए, तभी उसमें सफलता प्राप्त होती है।

2. बुद्धिमान् व्यक्ति को अपनी इन्द्रियों को वश में करके बगुले के समान पूरी एकाग्रता से अपने कार्य को सिद्ध करना चाहिये। चाणक्य के अनुसार, बुद्धिमान् व्यक्ति को देशकाल के अनुसार अपने सामर्थ्य को पहचानने हुए पूरी एकाग्रता से कार्य को करना चाहिये, तभी सफलता प्राप्त होती है।

3. सूर्योदय से पहले जागना, युद्ध के लिए सदा तैयार रहना, अपने बन्धुओं को उनका उचित हिस्सा देना और स्वयं पराक्रम करके अपना भोजन प्राप्त करना– ये चार बातें मुर्गे से सीखनी चाहिये। अथर्ववेद में बताये गये उपदेश को चाणक्य ने मुर्गे के उदाहरण से समझाया है।

4. ढीठ होना, समय–समय पर आवश्यक वस्तएँ संगृहीत करना, निरन्तर सावधान रहना और किसी दूसरे पर पूरी तरह विश्वास नहीं करना, ये पाँच बातें कौए से सीखनी चाहिये।

5. कुत्ते को जब खाने को मिलता है, तो बहुत अधिक खाता है, वह थोड़ा मिलने पर उसी से सन्तुष्ट रहना है। वह गहरी नींद सोता है, परन्तु थोड़ी–सी आहट होने पर एकदम जाग जाता है। वह स्वामिभक्त होता है, स्वामी के प्रति वफादारी रखता है और लड़ने में जरा भी नही घबराता। ये छः गुण कुत्ते से सीखने चाहिये।

6. व्यक्ति को गधे से तीन बातें सीखनी चाहिये। अत्यन्त थके हुए होने पर भी बोझ ढोना अर्थात् कार्य करते रहना सर्दी–गर्मी की चिन्ता न करना तथा सदा सन्तोषपूर्वक रहना।

चाणक्य कहते हैं कि व्यक्ति को जो काम सौंपा जाये, उसे अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर करना चाहिये। उसे सर्दी–गर्मी अर्थात् सुख–दुःख की परवाह नहीं करना चाहिये और उसे अपनी स्थिति से सन्तुष्ट रहकर जीवन को अच्छी तरह बिताना चाहिये।

–विजेता रघुवंशी, कक्षा–8

उम्र छोटी काम बड़े

1. गुरुनानक को 9 वर्ष की उम्र में ही उनके शिक्षक मौलाना कुतुबुद्दीन से भी बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त था।
2. सन्त ज्ञानेश्वर ने 12 वर्ष की उम्र में भगवद् गीता पर मराठी में ज्ञानेश्वरी गीता लिखी थी।
3. छत्रपति शिवाजी ने 13 वर्ष की उम्र में तोरण का किला जीता था।
4. भारत–कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू ने 13 वर्ष की उम्र में 1300 पंक्तियों की एक कविता अंग्रेजी में लिखी थी।
5. प्रख्यात नाटककार श्री हरीशचन्द चट्टोपाध्याय ने अपना प्रसिद्ध नाटक '' अबूहसन'' 14वर्ष की उम्र में लिखा था।
6. जगद्गुरु शंकराचार्य ने 6 वर्ष की उम्र में सारे भारत के पण्डितो को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।
7. विश्व–विजेता सिकन्दर ने 16 वर्ष की उम्र में शोरोनिया का युद्ध जीता था।
8. राज–काज हाथ में लेते समय रानी अहिल्याबाई की उम्र 18 वर्ष की थी।
9. विश्व–कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इंग्लैण्ड के महाकवि शेक्सपीयर के मैकबेथ नाटक का बंगला अनुवाद 14 वर्ष की उम्र में किया था।

–कु. प्रियंका प्रजापति, कक्षा–11(वाणिज्य)

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर, माँ कहती बनो इंजीनियर,
भैया कहते इससे अच्छा, सीखो तुम कम्प्यूटर।
चाचा कहते बनो प्रोफेसर, चाची कहती अफसर,
दीदी कहती आगे चलकर, बनना तुम कलेक्टर।
बाबा कहते फौज में जाकर, जंग में नाम कमाओ,
दीदी कहती घर में बैठकर, ही उद्योग लगाओ।
सबकी अलग–अलग अभिलाषा, सबका अपना नाता,
लेकिन मेरे मन की उलझन, कोई समझ न पाता।

–कु. संगीता रघुवंशी, कक्षा–7

अक्ल बड़ी या भैंस

महामूर्ख दरबार में, लगा अनोखा केस।
कसा हुआ है मामला, अक्ल बड़ी या भैंस।
अमंगल हरन है मंगलकारी।
भैंस सदा ही अकल पे भारी।
भैंस मेरी जब चरती चारा।
पाँच सेर हम दूध निकारा।
कोई अकल न यह कर पावै।
चारा खाकर दूध बनावै।
अकल घास जब चरने जाये।
हार जाये नर अति दुख पावे।
मोटी अकल मन्दमति होई।
मोटी भैंस दुग्ध अति होई।
अकल तो ले मोबाइल घूमे।
एसएमएस पाकर के झूमे।
भैंस सदा डायरेक्ट पुकारे।
कबहूँ यह मिस कॉल न मारे।
भैंस कबहुँ सिगरेट न पीती।
भैंस बिना दारू के जीती।
भैंस कभी न पान चबाये। न ही इसको नशा सुहाये।
शक्ति–शालिनी शाकाहारी। भैंस हमारी कितनी प्यारी।
अकलमन्द को कोई न जाने। भैंस को सारा जग पहचाने।
जाकी अकल में गोबर होई।
वह इंसान पटक सिर रोई।
भैंस से कर लो अपनी यारी।
भैंस का गोबर अकल पे भारी।
भैंस मरे तो जूते बनते।
अकल मरे तो जूते पड़ते।
अकल के पीछे लट्ठ ले भाई।
दौड़त क्यूँ मरकट की नाईं।
अकल बड़ी या भैंस का, यह किस्सा नमकीन।
अकल बजाती है सदा, भैंस के आगे बीन।

–कु. प्रज्ञा श्रीवास्तव, कक्षा–10

असफलता के आगे एक सफलता

– मैं आपको एक व्यक्ति की जिन्दगी की कहानी सुनाता हूँ। यह आदमी
– 21 साल की उम्र में व्यापार में असफल हुआ।
– 22 साल की उम्र में एक चुनाव हार गया।
– 24 साल की उम्र में फिर से व्यापार में असफल हुआ।
– 26 साल की उम्र में मानसिक सन्तुलन खो बैठा।
– 37 साल की उम्र में सीनेट का चुनाव हार गया।
– 47 साल की उम्र में उप–राष्ट्रपति बनने में नाकाम रहा।
– 49 साल की उम्र में फिर से सीनेट का चुनाव हार गया।
– 82 साल की उम्र में अमेरिका का राष्ट्रपति चुना गया। यह व्यक्ति अब्राहिम लिंकन था। क्या आप उन्हें असफल कहेंगे। वे हारकर बैठ सकते थे, लेकिन लिंकन के लिए हार एक पल की बाधा थी, कोई अन्त नहीं।

–अरुण रघुवंशी, कक्षा–12(गणित)

कामयाबी कोशिश से मिलती है

एक आदमी ने एक घोड़ा खरीदा और एक बड़ी–सी तख़्ती लगाकर उसे घुड़साल में खड़ा कर दिया। तख़्ती पर लिखा हुआ था, ''दुनिया का सबसे तेज दौड़ने वाला घोड़ा।'' घोड़े के मालिक ने न तो घोड़े से अभ्यास करवाया, न ही उसे चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए प्रशिक्षित किया। उसने घोड़े को एक रेस में दौड़ाया, जिसमें वह आखिरी नम्बर पर रहा। घोड़े के मालिक ने फौरन तख्ती बदल दी और घोड़े पर एक नयी तख्ती लगा दी, जिस पर लिखा था, ''घोड़े के लिए सबसे तेज दुनिया।'' लोग अपनी आलसीपन या जरूरी चीजों को न करने की वजह से नाकामयाब होते हैं और फिर किस्मत को दोष देते हैं।

संकलित–कु. उमा दाँगी, कक्षा–12 (गणित)

भावनाओं की समझ

एक बच्चा पालतू जानवरों की दुकान में एक पिल्ला खरीदने गया। वहाँ चार पिल्ले साथ बैठे थे, जिनमें से हर की कीमत 50 डॉलर थी। एक पिल्ला कोने में अकेला बैठा हुआ था। उस बच्चे ने जानना चाहा कि क्या वह उन्हीं बिकाऊ पिल्लों में से एक था और वह अकेला क्यों बैठा था? दुकानदार ने जवाब दिया कि वह उन्हीं में से एक है, मगर अपाहिज है और बिकाऊ नहीं है। बच्चे ने पूछा, उसमें क्या कमी है? दुकानदार ने बताया कि जन्म से ही इस पिल्ले की टाँग बिल्कुल खराब है और उसके पूँछ के पास के अंगों में भी खराबी है। बच्चे ने पूछा, आप इसके साथ क्या करेंगे? उसका जवाब था कि इसे हमेशा के लिए सुला दिया जायेगा। उस बच्चे ने दुकानदार से पूछा कि क्या वह उस पिल्ले के साथ खेल सकता है। दुकानदार ने कहा, क्यों नहीं। बच्चे ने पिल्ले को गोद में उठा लिया और पिल्ला उसके कान को चाटने लगा। बच्चे ने उसी समय फैसला किया कि वह उसी पिल्ले को खरीदेगा। दुकानदार ने कहा, यह बिकाऊ नहीं है, मगर बच्चा ज़िद करने लगा।

इस पर दुकानदार मान गया। बच्चे ने दुकानदार को 2 डॉलर दिये और बाकी के 48 डॉलर लेने अपनी माँ के पास दौड़ा। अभी वह दरवाजे तक ही पहुँचा था कि दुकानदार ने जोर से कहा, मुझे समझ में नहीं आता कि तुम इस पिल्ले के लिए इतने डॉलर क्यों खर्च कर रहे हो, जबकि तुम इतने ही डॉलर में एक अच्छा पिल्ला खरीद सकते हो। बच्चे ने कुछ नहीं कहा। उसने अपने बायें पैर से पैण्ट उठाई, उस पाँव में उसने ब्रेस पहन रखी थी। दुकानदार ने कहा, मैं समझ गया, तुम इस पिल्ले को ले जा सकते हो। इसी को दूसरों की भावनाएँ समझना कहते हैं।

संकलित–कु. रिंकी दाँगी,
कक्षा–12 (गणित)

प्रकृति नहीं, मनुष्य कर रहा है मनमानी

समाचार चैनल का संवाददाता,
जोर–जोर से चिल्ला रहा है,
माँ गंगा को विध्वंसिनी और सुरसा बता रहा है।
प्रकृति कर रही है, अपनी मनमानी,
गाँव, शहर और सड़क तक भरआया है, बाढ़ का पानी।
नदियों को सीमित करने वाले तटबन्ध टूट रहे हैं,
और पानी को देखकर प्रशासन के पसीने छूट रहे हैं।
पानी की मार से जनता का जीवन दुश्वार हो रहा है,
गंगा–यमुना का पानी आपे से बाहर हो रहा है।
बैराजों के दरवाजे चरमरा रहे हैं।
और टिहरी जैसे बाँध भी पानी को रोकने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं।
किसी ने कहा–पानी क्या है साहब, तबाही है तबाही,
प्रकृति को सुनाई नहीं देती मासूमों की दुहाई।
नदियों के इस बर्ताव से मानवता घायल हो जाती है,
सच है, बरसात के मौसम में नदियाँ पागल हो जाती हैं,
''ऐसा सुनकर माँ गंगा मुस्कुरायी और बयान देने जनता की अदालत में चली आयी।''
जब कठहरे में आकर माँ गंगा ने अपनी जुबान खोली,
तो वो करुणा–आ़क्रोश में कुछ यूँ बोली–मुझे भी तो अपनी जमीन छिनने का डर सालता है,
और मनुष्य तो मेरी निर्मल धारा में केवल कूड़ा–करकट डालता है।
धार्मिक आस्थाओं का कचरा मुझे झेलना पड़ता है।
जिन्दा से लेकर मुर्दों तक का अवशेष,
अपने भीतर ठेलना पड़ता है।
अरे, जब मनुष्य मेरे अमृत–से जल में,
पॉलीथीन बहाता है,
जब मरे हुए पशुओं की सड़ान्ध से मेरा,
जीना मुश्किल हो जाता है।
जब मेरी धारा में आकर मिलती है,
शहरी नालों का बदबूदार पानी
तब किसी को दिखायी नहीं देती, मनुष्य की मनमानी?
ये जो मेरे भीतर का जल है, इसकी प्रकृति अविरल है,
किसी तरह की रुकावट मुझसे,
सहन नहीं होती है,
फिर भी तुम्हारे अत्याचार का भार,
धाराएँ अपने ऊपर ठोती हैं।
तुम निरन्तर डाले जा रहे हो मुझमें,
औद्योगिक विकास का कबाड़,
ऐसे ही थोड़े आ जाती है बाढ़,
मानव की मनमानी जब सारी, हदें पार कर देती है।
तो प्रकृति भी अपनी सीमाओं को खूँटी पर टाँग देती है,
नदियों का पानी जीवनदायी है, इसी पानी ने युगों–युगों से खेतों को, सींच कर मानव की भूख मिटायी है।
और मानव, मानव तो स्वभाव से ही आततायी है
इसने निरन्तर प्रकृति का शोषण किया,
और अपने ओछे स्वार्थों का पोषण किया।
नदियों की धारा को बाँधता गया,
मीलों फैले मेरे पाट को कंक्रीट के दम पर काटता गया,
सच तो ये है कि मनुष्य निरन्तर नदियों की ओर बढ़ता आया है,
नदियों की धारा को संकुचित कर इसमें शहर बसाया है,
''ध्यान से देखें तो आप समझ पायेंगे कि नदी शहर में घुसी है या शहर नदी में घुसा है।''
जिसे बाढ़ का नाम लेकर मनुष्य हैरान–परेशान है,
ये तो दरहसल गंगा का नेचुरल सफाई अभियान है।

–कु. सृष्टि दुबे,
कक्षा–12 (जीवविज्ञान)

जीवन में दो ही व्यक्ति असफल रहते हैं। एक वे, जो सोचते हैं पर करते नहीं।

मेरा विद्यालय

मेरे विद्यालय का क्या कहना है,
अनुशासन इसका गहना है।
इसकी बनक–रौनक देखकर हम दंग रह जाते हैं,
बड़े–बड़े लोग भी इसकी प्रशंसा करते हैं।
इस विद्यालय में पढ़ना सौभाग्य हमारा है,
विदिशा जिले में पहला विद्यालय हमारा है।
अच्छे–अच्छे अध्यापक इसमें उनका तो क्या कहना है,
बासौदा के नवांकुर विद्यालय का क्या कहना है।
अध्यापक हमको अच्छी–अच्छी बातें बताते हैं,
महापुरुषों की याद दिलाते हैं।
मेरे विद्यालय का क्या कहना है,
यह सब विद्यार्थियों का गहना है।

–कु.करिश्मा वर्मा, कक्षा–12 (जीवविज्ञान)

मेरी गुड़िया

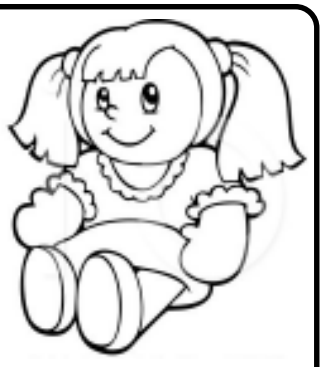

मेरी गुड़िया भोली–भाली,
है हरदम खुश रहने वाली।
हँसती–मुस्काती रहती है,
देती वह फूलों को लाली।
हरे–हरे कपड़ों में सजकर,
विखराती मन पर हरियाली।
पीती है वह दूध–बताशा,
भर–भरकर चाँदी की प्याली।
कभी–कभी वह गाल फुलाकर,
बन जाती है नखरोंवाली।
पढ़ने–लिखने में वह आगे,
सचमुच उसकी शान निराली।

–कु. निशी रघुवंशी, कक्षा–4

आई जुलाई

बीती छुट्टियाँ आई जुलाई, स्कूल खुले अब करो पढ़ाई।
देखो अपने साथ–साथ यह, कितने सारे सन्देश लाई।
मौज–मस्ती के दिन बीते, मेहनत का अब समय आया।
नयी क्लास, नयी किताबें, नये दोस्तों को तुमने पाया।
हर कदम मेहनत का तुम्हें, मंजिल तक पहुँचायेगा।
और एक दिन तुमको ये सब, शिखर तक ले जायेगा।
भूलो छुट्टियों की बातें, मन में न रखो कोई सन्देश।
अब जुट जाओ लगन से, पढ़ाई का करो श्रीगणेश।
बीती छुट्टियाँ आई जुलाई, स्कूल खुले अब करो पढ़ाई।

–कु. सलोनी विश्वकर्मा, कक्षा–1(डॉल्फिन)

भारत की घड़ी

एक आदमी ने धरती से किया प्रस्थान और यमराज के कक्ष में घड़ियाँ–ही–घड़ियाँ देखकर, रह गया हैरान।
हर देश की अलग घड़ी थी कोई छोटी कोई बड़ी थी।
कोई दौड़ रही थी कोई बन्द, कोई तेज थी कोई मन्द।
उनकी अलग–अलग रफ्तार देखकर, आदमी चकराया।
कारण पूछा तो यमराज ने बताया, हर घड़ी की उसी हिसाब से है रफ्तार।
जिस हिसाब से हो रहा है, उस देश में भ्रष्टाचार।
आदमी ने चारों तरफ नजर दौड़ायी, लेकिन भारत की घड़ी कहीं भी नजर नहीं आयी।
आदमी मुस्कुराया यमराज के पास गया और उसके कान में फुसफुसाया।
भारत वाले भ्रष्टाचार यहाँ भी ले आये।
सच–सच बताओ भारत की घड़ी न रखने के लिए कितने पैसे खाये।
यमराज बोले– बेटे तेरे शक की सुई तो बिना बात उछल रही है।
मेरे बैडरूम में जाकर देखो पंखे की जगह भारत की घड़ी चल रही है।

–अजय बघेल, कक्षा–10

नेताओं का आग्रह

भ्रष्टाचारियों ने लूटा देश को बार–बार।
नेता कह रहे अभी एक और बार।।
भ्रष्टाचारी कर रहे, घोटालों पर घोटाले।
नेता कह रहे, यार! अभी एक और बार खाले।।
भ्रष्टाचारियों ने देश की छाती में घोंप दिया छुरा।
नेता कह रहे, 'यार' इसमें क्या बुरा।।
भ्रष्टाचारी कर रहे अर्थव्यवस्था की भीषण हानि।
वित्तमन्त्री जी कह रहे,
'हम सँभाल लेंगे, नहीं कोई परेशानी।
भ्रष्टाचारी लूट रहे देश को विद् प्लेजर।
नेता कह रहे–इट्स ऑलसो माई ट्रेजर।
भ्रष्टाचारियों ने किसा देश का बेड़ा गर्क।
नेता कह रहे, ऐसे ही तो बनता है, देश स्वर्ग।।
भ्रष्टाचारी समझ रहे देश को 66 साल से गिद्ध–भोज।
नेताओं ने इस गिद्ध–भोज को यह कह कर किया–ऑर्गेनाइज कि ''आजादी से आपके आगमन तक.....।

–कामेश गौड, कक्षा–11(गणित)

जीवन के सात प्रमुख नियम

- अपने अतीत के साथ सामंजस्य बनाये रखें, ताकि वह वर्तमान को अव्यवस्थित न कर पाये।
- दूसरे लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, इससे कोई मतलब न रखें।
- समय लगभग सभी जख्म भर देता है, अपने समय का इन्तजार करें।
- दूसरों के जीवन से अपनी तुलना मत करें, क्योंकि आप उसके बारे में सब–कुछ नहीं जानते।
- बहुत ज्यादा सोचना बन्द करें, यह सही है कि आपको जवाब नहीं मालूम। समय आने पर आपको सब पता चल जायेगा।
- आपकी खुशी को आपके अलावा कोई नहीं बदल सकता।
- हमेशा मुस्कराते रहो।

–विशाल दाँगी, कक्षा–9

क्रोध के भूल में सिर्फ 'मैं' होता है

कोई नहीं चाहता कि जिन्दगी में कभी जहर से सम्बन्ध बने। जहरीले जीव–जन्तु, सड़ा–गला भोजन, कुछ बीमारियाँ या गलत दवाएँ, ये सब सामान्य रूप से विष के स्रोत माने जाते हैं। हम इनके प्रति सावधानी भी रखते हैं, लेकिन एक विष ऐसा है, जिसे हम जाने–अनजाने में रोज पी जाते हैं। इस विषपान के पीछे कोई कर्त्तव्य की दुहाई देता है, तो कोई स्वभाव का मामला बताता है। अधिकांशतः इसे लेकर दूसरों को दोषी बताते है। इस जहर का नाम है क्रोध। टुकड़े–टुकड़े आत्महत्या का नाम क्रोध है। हर क्रोधी व्यक्ति यह दावा करता है कि वैसे तो मैं शान्त रहता हूँ, पर जब कोई दूसरा गड़बड़ करता है, तो मुझसे सहन नहीं होता। दरअसल, ये सारे तर्क बेबुनियाद हैं। क्रोध का सम्बन्ध दूसरे से ही नहीं, इसका पूरा लेन–देन ''मैं'' से है। क्रोध के मूल में सिर्फ ''मैं' होता है। अब तो विज्ञान ने भी घोषणा की है, क्रोधी मनुष्य के रक्त की जाँच करवायें, तो इसमें विष के लक्षण पाये जाते हैं। यह तय है कि क्रोध खून को विषाक्त कर देता है और तीन बड़े नुकसान कर जाता है। बुद्धि कमजोर हो जाती है, शरीर की बीमारियों के सहने की क्षमता क्षीण होती है तथा हमारे लोगों से सम्बन्ध बिगड़ने लगते हैं। क्रोध करके हम खुद को जहरीला बनाने की तैयारी कर रहे होते हैं। लाख कसमें खा लो, प्रण ले लो, प्रतिज्ञाएँ कर लो कि अब कभी क्रोध नहीं करेंगे, पर यह कमबख्त जब आता है, तो बस आ ही जाता है। इसलिए थोड़ा–थोड़ा अपने 'मैं' की क्रिया है। मेडिटेशन करने वाले कम विषैले पाये जायेंगे।

–कु. रश्मि दाँगी, कक्षा–12(गणित)

शिवधाम में ताण्डव

केदारनाथ में जो हुआ, उसकी कल्पना करना मुमकिन ही नहीं है। जिन पर बीती है, उन्हें न जाने पूरी नींद कब आयेगी। उस दिन उनकी आपस में कई बातें हो रही होंगी, कोई कह रहा होगा, यहाँ की प्राकृतिक घटा कितनी निराली है। हमें हर साल यहाँ आना चाहिये, अब तक क्यों नहीं आये, कोई अपनों से रूठा होगा, कोई बहुत खुश होगा।

अचानक ही एक सैलाब आया और सब कुछ बहा ले गया। कई मासूमों की जिन्दगियाँ, उनके सपने, उनके परिवार, उनकी हँसी, सब कुछ पानी ने पहाड़ों के नीचे धकेल दिये।

जो हुआ, वह नसीब की किसी लकीर के कारण नहीं था, वह तो कर्मों का नतीजा था। प्रकृति ने शिवधाम में ताण्डव किया, जो इसकी ज़द में आये, वे मासूम थे। यही समझाना चाहती है प्रकृति हमें। अगर कहीं कुछ, प्रकृति के साथ खिलवाड़ हो रहा है, तो चुप्पी न साधें। यह सब प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ का ही तो नतीजा था। अब भी सम्भलने का अवसर है।

–कु. सुरभि बघेल, कक्षा–12(वाणिज्य)

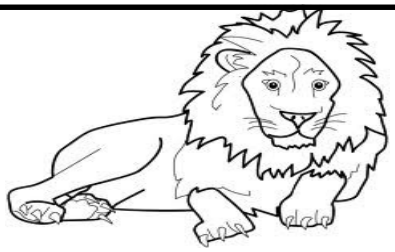

शेर निराला

शेर निराला, हिम्मत वाला,
लम्बी–लम्बी मूँछों वाला।
तेज नुकीले दाँतों वाला,
सबका दिल दहलाने वाला।
दहाड़ मारकर सबको डराता,
जंगल का राजा कहलाता।

–कु. रितिका कुर्मी कक्षा–3

STUDENTS

Student you are a big tension,
You most unpleasent gift is examination,
Maths is full of calculation,
In geography, location,
In history, civilization,
And english requries punctuation,
In chemistry reaction,
In bio Fermentation,
In botany plantaion,
In hindi composition,
And in sanskrit translation.

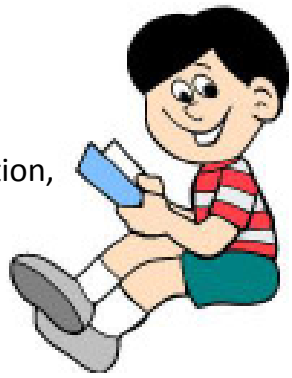

All these together five give me no relaxation, You are the greatest disaster
Of the young generation.
We have decided to write an application,
To the minister of education,
To DEDUCT FOREVER ALL THE EXMINATION.

-**Ku. Sonu Gurjar,** Class-10th

Very interesting unknown facts

- The olympics location is always officially listed in the hosting city as opposed to the country.
- The first ever opening caremonies were held at the Londan olympic Games in 1908.
- In 1912 the last gold medel made entirely out of gold was awarded.
- The Berlin Games in 1936 were the first games to be televised.
- It wasn't until 1900 that woman were allowed to participate in the olympic games.
- The aldest olympic medialist was oscar swahn of sweden he won his last medal at the age of 72.

- **KU. Hani Mishra**, Class-9th

अंकों का जादू

गिनती तो हम सभी बचपन से ही सीखते हैं और इसी गिनती से जोड़ना, घटाना, गुणा तथा भाग भी सभी तरह के सवाल भी करते हैं।

जोड़ और गुणन से अंक ऐसी संख्याओं का कुछ ऐसा संयोग बनाते हैं उन्हें देखना और सीखन दिलचस्प है।

1x8+1 = 9,
12x8+2 = 98,
123x8+3 = 987,
1234x8+4 = 9876,
12345x8+5 = 98765,
123456x8+6 = 987654,
1234567x8+7 = 9876543,
12345678x8+8 = 98765432,
123456789x8+9 = 987654321

सीधी उल्टी गिनती तो सीख ली अब बनाते हैं सीधी गिनती और उल्टी गिनती एक के साथ में–

1x1 = 1
11x11 = 121
111x111 = 12321
1111x1111 = 1234321
11111x11111 = 123454321
111111x111111 = 12345654321
1111111x1111111 = 1234567654321

–कु.ज्योत्सना श्रीवास्तव, कक्षा–11(गणित)

माँ

हिमालय से ऊँची है माँ,
किन्तु पाषाण–सी कठोर नहीं।
सागर से गहरी है माँ,
किन्तु सागर–सी खारी नहीं।
वायु–सी गतिशील है माँ,
किन्तु वायु–सी अदृश्य नहीं।
परमेश्वर की जननी है माँ,
माँ की कोई उपमा नहीं हो सकती,
क्योंकि 'माँ' उप.....'माँ' नहीं हो सकती।

–कु. नैनसी दुबे, कक्षा–8

यह मुश्किल नहीं है

1. मुस्कराना,
2. क्षमायाचना,
3. निस्वार्थ रहना,
4. गलती स्वीकारना।
5. अपने आप पर हँसना
6. सोच–विचार कर कार्य करना,
7. अपने काम में आनन्द लेना,
8. क्षमा करना और भूल जाना,
9. बिगड़ी मन स्थिति को नियन्त्रित करना,
10. किसी को खुश करना,
11. गलतियों से सीखना,
12. उत्तर देना, न कि प्रक्रिया करना,
13. ईमानदार व सत्यप्रिय होना,
14. निन्दा या आलोचना नहीं करना,
15. सही आरोप सहन करना,
16. उकसाने पर भी शान्त रहना,
17. बिना टोका–टाकी के सुनना,
18. अपने प्रियजनों से शिष्ट व्यवहार करना,
19. दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करना,
20. अपेक्षा से अधिक कार्य करना,
21. यह सब करना महत्त्वपूर्ण है। ये सफलता, समृद्धि व सुखी जीवन के 20 मूल मन्त्र हैं।

–कु. आकांक्षा रघुवंशी, कक्षा–9

यह बनो, पर यह नहीं

स्पष्ट बनो – पर उद्दण्ड नहीं,
क्षमाशील बनो – पर डरपोक नहीं,
गम्भीर बनो – पर मनहूस नहीं,
सावधान बनो – पर जल्दबाज नहीं,
न्यायी बनो – पर निर्दयी नहीं,
सरल बनो – पर मूर्ख नहीं,
प्रेमी बनो – पर पागल नहीं,
भले बनो – पर दुर्बल नहीं,
खरे बनो – पर खारे नहीं,
दृढ़ बनो – पर हठी नहीं,
मितव्ययी बनो – पर कंजूस नहीं,

–कु. आकांक्षा उपाध्याय, कक्षा–9

तीन चीजों से हमेशा सन्तुष्ट रहें (1) अपने जीवन–साथी से,

मध्यप्रदेश की महिमा

जिसे छुपाकर रखने दिल में, होता वही विशेष है।
जो भारत के दिल में बसा है, अपना मध्यप्रदेश है।।
सोयाबीन यहाँ का उत्तम, स्वर्ण पीसती आभा।
शरबतिया गेहूँ को देखकर, जग करता है वाहवा।।
चन्देरी की बुनी साड़ियाँ, परिधानों में विशेष है।
जो भारत.....
राजकीय पंछी की संज्ञा, दूधराज को दी है।
बारहसिंगे पशुओं में राजकीयता ली है।
साँची के स्तूप शिलापर, टंकित सुन्दर लेख हैं।
जो भारत.....
कालीसिन्ध, बेतवा, रेवा, कलकल, छलछल बहतीं।
खजुराहो मन्दिर पे अंकित, आकृतियाँ कुछ कहतीं।
फसलें लहर–लहर लहरातीं, गीत गारहा खेत है।
जो भारत.....
महाकाल के दर्शन करने आते हैं उज्जैनी।
भस्मारती से भक्तों को मिलती स्वर्ग नसैनी।
जैन तीर्थ–मन्दिर सोनागिरी करता दूर कलेश है।
जो भारत.....
तालों में भोपाल ताल है, और करेली गन्ना।
उत्तम धनियाँ गुना क्षेत्र का, हीरे उगले पन्ना।
अशोकनगर का धाम करीला, आस्था का सन्देश है।
जो भारत.....

–कमलेश पंथी, कक्षा–10

गुरु की महिमा

जब हम किसी मन्दिर में जाते है, तो उस मन्दिर में विराजमान देवी–देवताओं को प्रणाम करते हैं, परन्तु विद्यालय आने पर हम उस बात क्यों भूल जाते हैं, कि हमारा विद्यालय भी एक मन्दिर है तथा उसमें विराजमान देवी–देवता हमारे गुरुजन हैं। हमें विद्यालय में बैठै गुरुजनों को प्रणाम जरूर करना चाहिये। एक बात स्मरण कराने हेतु है कि भगवान् को मनाने के लिए हमें पूजा–अर्चना करनी पड़ती है, परन्तु हमारे गुरु तो हमसे हमेशा ही प्रसन्न रहते हैं तथा उन्हें किसी पूजा–अर्चना की जरूरत नहीं पड़ती। किसी ने कहा है कि गुरु ब्रह्म है, गुरु विष्णु है, गुरु महेश्वर, लेकिन गुरु इनमें से कोई नहीं है, वे उन से भी बड़े हैं। अगर भगवान् हमें जन्म देते हैं, तो गुरु हमारे उस जीवन को सँवारते हैं। अगर भगवान् हमारी किस्मत लिखते हैं, तो गुरु हमे उस तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं। एक दोहा है–

"गुरु गोविन्द दोऊ, खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।"

अर्थात् स्वयं भगवान् ने भी स्वीकार किया है कि गुरु का पद मुझसे भी ऊँचा है। गुरु की महिमा अनन्त है, गुरु का कोई अन्त नहीं।

–सौरभ तामेश्वरी, कक्षा–9

सत्संग

सत्संग से सुख मिलता है,
जीवन का कण–कण खिलता है।
सत्संग से सद्ज्ञान मिले, सत्संग से भगवान मिले।
पानी से पौधा खिलता है, सत्संग से सुख मिलता है।
सत्संग से वैराग्य बढ़े, सत्संग से सौभाग्य बढ़े।
दीपक से दीपक जलता है, सत्संग से सुख मिलता है।
नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है,
पापी भी पावन बन जाता है।
चाबी से ताला खुलता है, सत्संग से सुख मिलता है।
कपड़े को जैसा रंग मिले, मानव को जैसा संग मिले।
बस उसी ढंग से ढलता है, सत्संग में सुख मिलता है।

–सोमिल जैन, कक्षा–9 (डॉल्फिन)

(2) उस भोजन से, जो विधाता ने प्रदान किया, (3) उस धन से, जो ईमानदारी से प्राप्त किया।

प्यारा डॉल्फिन

ये सफ़र जोश का, ये खुशी जीत की।
मिसाल हैं ये खुशियाँ, हमारे अतीत की।
हुए भव्य नौ साल हैं पूरे, आने हैं साल सुनहरे।
हम विद्यार्थी जन–जन के, करेंगे सभी ख़्वाब पूरे।
ये सफ़र जोश का, ये खुशी जीत की।
मिसाल हैं ये खुशियाँ, हमारे अतीत की।
आज जश्न के मौके पर, ये कसम फिर हम दोहरायेंगे।
सारे जहाँ में हम भारत का सम्मान बढ़ायेंगे।
ये सफ़र जोश का, ये खुशी जीत की।
मिसाल हैं ये खुशियाँ, हमारे अतीत की।

भास्करनाथ पाण्डेय
कक्षा–7 (डाल्फिन)

आदमी

जिन्दगी में रो रहा है आदमी,
मौत पर खुश हो रहा है आदमी।
आदमी की हैवानियत का क्या कहें,
आदमी को खा रहा है आदमी।
अल्लाह को पाने की कोशिश की मगर,
इंसानियत खो रहा है आदमी।
कोई किसी के काम तो आता नहीं,
अपनी अर्थी ढो रहा है आदमी।
दूर लुटता घर–बार लेकिन गैर का,
कब्र में सो रहा है आदमी।
दूर पर पीछे रही मंजिल पड़ी,
किस दिशा में जा रहा है आदमी।

–कु. सुरुचि शर्मा, कक्षा–8

अपना ज्ञान बढ़ायें

मध्यप्रदेश

राज्य का नाम	–	मध्यप्रदेश,
अन्य नाम	–	टाइगर स्टेट, सोया स्टेट, हृदय–प्रदेश,
राजधानी	–	भोपाल
स्थापना दिवस	–	1 नवम्बर, 1956
राजभाषा	–	हिन्दी,
अन्य भाषा	–	उर्दू व अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ,
राजकीय चिह्न	–	एक वृत्त, जिसमें गेहूँ और धान की बालियाँ प्रदर्शित हैं।
राजकीय पुष्प	–	सफेद लिली,
राजकीय	–	बारहसिंगा,
राजकीय पक्षी	–	दूधराज (शाहे बुल–बुल),
राजकीय वृक्ष	–	बरगद (वट–वृक्ष),
राजकीय मछली	–	महाशीर,
राजकीय नाट्य	–	माच,
राजकीय खेल	–	मलखम्ब,
क्षेत्रफल	–	3,08,245 वर्ग किलोमीटर,
विधानसभा सीटें	–	230,
लोकसभा सीटें	–	29,
राज्य सभा सीटें	–	11,
सम्भाग	–	10,
जिले	–	51,
तहसील (मार्च 2012)	–	352,
विकासखण्ड	–	313,
आदिवासी विकासखण्ड	–	8,
नगर/शहर	–	376,
नगर–निगम	–	14,
नगर–पालिकाएँ	–	97,
नगर–पंचायत	–	258,
जिला–पंचायत	–	50,
ग्राम–पंचायत	–	23,012,

समय और समझ दोनों एक साथ खुशकिस्मत लोगों को ही मिलती है,

जनपद–पंचायत – 313,
कुल ग्राम – 54,903,
आबाद ग्राम – 52,117,
विद्युतीकृत ग्राम (2010) – 34,240,
पुलिस जिले – 11,
पुलिस थाने – 996,
प्रदेश का उच्च न्यायालय – जबलपुर,
खण्डपीठ – इन्दौर व ग्वालियर,
वर्तमान मुख्यमन्त्री – श्री शिवराजसिंह चौहान,
राज्यपाल – श्री रामनरेश यादव,
मुख्य–न्यायाधीश – जस्टिस शरद, अरविन्द बोबड़े,
मुख्य सचिव – आर. परशुराम,
विधान–मण्डल – एक सदनात्मक,
विधानसभा–अध्यक्ष – ईश्वरदास रोहाणी,
विधानसभा–उपाध्यक्ष – हरवंश सिंह,
नेता प्रतिपक्ष – अजयसिंह,
लोकायुक्त – जस्टिस प्रकाश, प्रभाकर नावलेकर,
म.प्र.सूचना–आयुक्त – इकबाल अहमद।

–रवि राय, कक्षा–12 (गणित)

प्रमुख खेल तथा खिलाड़ियों की संख्या

खेल का नाम	**संख्या**
1. हॉकी	11,
2. क्रिकेट	11,
3. बेसबॉल	9,
4. बॉस्केटबॉल	5,
5. बैडमिण्टन	1/2,
6. बिलियर्ड्स	1,
7. मुक्केबाजी	1,
8. फुटबॉल (एसोसिएशन)	11,
9. फुटबॉल (रग्बी)	15,
10. नेटबॉल	7,
11. पोलो	4,
12. टेबल–टेनिस	1/2,
13. टेनिस	1/2,
14. वॉलीबॉल	6,
15. ब्रिज	2,
16. शतरंज	1,
17. वाटर पोलो	7,
18. कबड्डी	7,

–अंकित दिवाकर, कक्षा–8

राष्ट्रीय कप एवं ट्रॉफियाँ

1. आगा खाँ कप – हॉकी,
2. ध्यानचन्द ट्रॉफी – हॉकी,
3. डुरण्ड कप – फुटबॉल,
4. दिलीप ट्रॉफी – क्रिकेट,
5. सन्तोष ट्रॉफी – फुटबॉल,
6. नेहरू ट्रॉफी – हॉकी,
7. डी.सी.एम. ट्रॉफी – फुटबॉल,
8. राधा मोहन कप – पोलो,
9. रंजी ट्रॉफी – क्रिकेट,
10. ईरानी ट्रॉफी – क्रिकेट,
11. रोवर्स कप – फुटबॉल,
12. सिन्धिया गोल्ड कप – हॉकी,
13. वेंलिंगटन ट्रॉफी – नौका–दौड़,
14. लेडी रतन टाटा ट्रॉफी – महिला हॉकी,
15. सब्रतो मुखर्जी कप – फुटबॉल (स्कूल)।

–निखिल रघुवंशी, कक्षा–9

Family

F- Father,
A- and,
M-Mother,
I- I,
L- Love,
Y- you

-Divya Shrivastava(Dolphin)

पहेलियाँ

1. अटरगली, बटर गली, गली गली रस से भरी,
   जो पहेली का उत्तर दे, उसके मुँह में रसभरी।
2. एक छड़ी जो दूध से भरी।
3. हाथ है, पर हथेली नहीं,
   सिर है, पर धड़ नहीं।
4. राजा–रानी, सुनो कहानी, एक घड़े में हों रंग–पानी,
5. यह हमको देती आराम, यह ऊँची तो नाम,
   बड़े–बड़े लोगों में देखा, इसके लिए होता संग्राम।

(उत्तर–1. जलेबी 2. ट्यूब लाईट, 3. केकड़ा, 4. अण्डा, 5. कुर्सी)

–आकाश राठौर, कक्षा–10

1. कबीर रहीम ने जिनमें अपनी
   बातें सबको है समझाईं।
   उसी नाम का वह शहर है,
   जहाँ कभी एशियाड हुए थे भाई।
2. जहाँ में एक ऐसा शहर है दोस्तो,
   जिसमें मोटर कार नहीं है।
   नहरों और बोटों का नाता,
   बाकी कुछ दरकार नहीं है।
3. दुनिया का सबसे छोटा देश,
   जिसको है जी माना जाता।
   लेकिन एक सिटी के नाम से,
   इसको जग में जाना जाता।
4. हुसैन–सागर लेक है,
   इस शहर की शान।
   मोतियों के लिए भी है प्रसिद्ध,
   बूझो इस शहर का नाम।
5. सबसे बड़ा द्वीप है जिस पर,
   दिखता सदा सफेद ही सीन।
   बर्फ–ही–बर्फ वहाँ है होती,
   लेकिन कहलाता है ग्रीन।

(उत्तर–1. दोहा(कतर), 2. वेनिस, 3. वेटिकनसिटी 4. हैदराबाद 5. ग्रीनलैण्ड)

–कु. वर्षा यादव, कक्षा–11 (वाणिज्य)

स्कॉलरशिप्स

देश में पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप्स

विदेशी यूनिवर्सिटीज और इंस्टीट्यूट में पढ़ने के लिए होने वाली परीक्षाओं और वहाँ मिलने वाली स्कॉलरशिप्स के बारे में भारत में भी छात्रों के लिए कई तरह की स्कॉलरशिप स्कीम्स मौजूद हैं। जानिये, ऐसी कुछ स्कॉलरशिप्स के बारे में .....

सरकारी स्कॉलरशिप्स

होनहार छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेस (एमएचआरडी) और डिपार्टमेण्ट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी (डीटीई) की कई स्कॉलरशिप्स मौजूद हैं। सालाना करीब 2 लाख से भी ज्यादा छात्र इनका फायदा उठा रहे हैं। इनमें से कुछ के लिए एग्जाम्स होती हैं, तो कुछ मेरिट बेसिस पर मिलती हैं। ये स्कॉलरशिप्स, छात्र पढ़ाई पूरी करने तक के लिए भी हासिल कर सकते हैं यानी स्कूल से पीएचडी तक, हर कदम पर आर्थिक सहायता।

1. आईसीएमआर पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च फेलो –स्कीम

हर साल सिर्फ 50 रिसर्च स्कॉलर्स को रिसर्च के लिए मिलती है, इण्डियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) की यह स्कॉलरशिप।

एलिजिबिलिटी:– पीएचडी, एमडी या एमएस की डिग्री।

आयु सीमा– 32 साल जनरल के लिए, एससी–एसटी और महिलाओं के लिए 37 साल। रिसर्च कहीं पब्लिश हुई हो या कोई अवॉर्ड्स मिले हों, तो आयु–सीमा में तीन साल की छूट।

सिलेक्शन:–चयन इण्टरव्यू के जरिये। जिन छात्रों की रिसर्च पब्लिश हुई हो या अवॉर्ड मिले हों, उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी।

ड्यूरेशन और वैल्यू:– पोस्ट डॉक्टोरल फेलो के लिए 35 हजार रुपये प्रति माह, हाउस रेण्ट अलाउंस और

नॉन प्रैक्टिसिंग अलाउंस। 3 लाख रुपये सालाना की कण्टिजेंसी ग्राण्ट। इसमें से 25 फीसदी ग्राण्ट का इस्तमाल ट्रेवल एक्सपेंसेस के लिए।

2. न्यू सेण्ट्रल सेक्टर स्कीम ऑफ स्कॉलरशिप

कॉलेज और यूनिवर्सिटी के जरूरतमन्द, लेकिन होनहार छात्रों के लिए एमएचआरडी की स्कॉलरशिप। इसके जरिये ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्सेस की पढ़ाई का खर्च दिया जाता है। हर साल 41 हजार छात्र और 41 हजार छात्राओं को मिलती है यह स्कॉलरशिप।

एलिजिबिलटी:– 12वीं कक्षा में 80 फीसदी से ज्यादा अंक। किसी अन्य स्कॉलरशिप के लिए अप्लाय नहीं किया हो। परिवार की आय 4.5 लाख रुपये सालाना से ज्यादा न हो।

सिलेक्शनः– बोर्ड–रिजल्ट के बाद उन छात्रों की मेरिट लिस्ट जारी होती है, जिनकी फैमिली इंकम कम, लेकिन स्कोर बेहतरीन हो। ये छात्र फिर स्कॉलरशिप के लिए अप्लाय कर सकते हैं।

ड्यूरेशन और वैल्यू:–पढ़ाई के दौरान साल में दस महीने मिलती है राशि। ग्रेजुएट स्टूडेण्ट्स को एक हजार रुपये और पीजी कर रहे छात्र को उन्हें पढ़ाई के चौथे और पाँचवे साल में दो हजार रुपये प्रति माह।

3. इंस्पायर स्कॉलरशिप

डिपार्टमेण्ट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के इनोवेशन इन साइंस पर्स्यूट फॉर इंस्पायर्ड रिसर्च (इंस्पायर) प्रोग्राम के तहत् छात्रों को हायर एजुकेशन के लिए स्कॉलरशिप्स दी जाती हैं ये हैं:– स्कॉलरशिप फॉर हायर एजुकेशन (एसएचई) और अश्योर्ड अपॉर्च्यूनिटी फॉर रिसर्च कैरियर (एओआरसी)

⊙**एसएचई**:–नेचुरल और बेसिक सांइसेज में बैचलर या मास्टर डिग्री लेने पर 10 हजार छात्रों को मिलती है हर साल।

एलिजिबिलिटी:– 12वीं बोर्ड में टॉप 1प्रतिशत पर्सेंटाइल में या जेईई या एनईईटी में टॉप 10 हजार में रैंक या किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन–योजना या एनटीएसई या जगदीश बोस नेशनल टेलेण्ट सर्च एग्जाम क्लीयर कर चुके हों।

ड्यूरेशन और वैल्यू:–हर साल 80 हजार रुपये ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के दौरान

⊙**एओआरसी**:–युवा शोधकर्ताओं को अपनी पसन्द के विषय पर स्वतन्त्र रूप से शोध करने में मददगार। हर साल 1000 अवॉर्ड्स।

एलिजिबिलिटी:–रिसर्च स्कॉलर या जिन्होंने अपनी यूनिवर्सिटी में टॉप किया हो या 12वीं की परीक्षा या आईआईटी–जेईई में टॉप 1 फीसदी छात्रों में हो।

ड्यूरेशन और वैल्यू:– आईआईटी के असिस्टेण्ट प्रोफेसर जितनी राशि के साथ ही 7 लाख रुपये का रिसर्च ग्राण्ट, पाँच साल तक।

4. नेशलन रिसर्च फेलोशिप्स

डीएसटी ने साइण्टिफिक रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए रामानुजन फेलोशिप और जे.सी.बोस फेलोशिप दी हैं। दोनों के लिए साइंस या इंजीनियरिंग में पीएचडी, इंजीनियरिंग में मास्टर्स डिग्री या मेडिसिन में एमडी, वर्क एक्सपीरियंस जरूरी है।

5. रामानुजन फेलोशिपः–दुनिया–भर के साइण्टिस्ट और इंजीनियर्स कर सकते हैं अप्लाय। छात्रों का चयन डीएसटी करेगा।

वैल्यू और ड्यूरेशनः–हर महीने 50 हजार रुपये की फेलोशिप। 5 लाख रुपये सालाना का कण्टिंजेंसी ग्राण्ट। शुरूआत में पाँच साल के लिए वैलिड रहेगी। स्कॉलरशिप तीन साल के बाद फेलोशिप राशि 60 हजार रुपये प्रतिमाह होगी।

6. जे.सी.बोस फेलोशिपः–सिर्फ देश के इंजीनियर्स और साइण्टिस्ट कर सकेंगे अप्लाय, जिनकी उम्र 60 साल से कम हो।

वैल्यू और ड्यूरेशनः–इंकम के साथ ही हर महीने 20 हजार रुपये की फेलोशिप। 5 लाख रुपये सालाना की

कण्टिंजेंसी ग्राण्ट। पाँच साल के लिए रहेगी फलोशिप।

7. माइनॉरिटी और स्पेशल स्कॉलरशिप

सरकारी और शैक्षणिक संस्थाओं की कुछ स्कॉलरशिप मेरिट के आधार पर तो कुछ सिर्फ अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों द्वारा अप्लाय करने पर ही मिल जाती है। स्पेशली एबल्ड छात्रों को प्रोत्साहन देने और लड़कियों की हायर स्टडीज के लिए भी कुछ स्कॉलरशिप मौजूद है।

8. **सीबीएसई सिंगल गर्ल चाइल्ड मेरिट स्कॉलरशिप** जो छात्राएँ माता–पिता की इकलौती सन्तान हों और जिन्होंने इस साल 10वीं या 12वीं की परीक्षा पास की हो, उनके लिए सेण्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन (सीबीएसई) ने यह स्कॉलरशिप दी है।

एलिजिबिलिटी:– माता–पिता की इकलौती सन्तान हों, सीबीएसई 10वीं की परीक्षा में कम–से–कम 60प्रतिशत अंक या 6.2 ग्रेड पॉइण्ट एवरेज।

सिलेक्शन:– मेरिट के आधार पर।

वैल्यू और ड्यूरेशन:–500रुपये प्रति माह। दो साल के लिए। हालाँकि दूसरे साल स्कॉलरशिप के रीन्यू होने के लिए कम–से–कम 50 फीसदी अंक लाना जरूरी है।

9. एनएचएफडीसी स्कॉलरशिप

शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों के लिए। मिनिस्ट्री ऑफ सोशल जस्टिस एण्ड एम्पावरमेण्ट के तहत ये स्कॉलरशिप नेशनल हैण्डिकैप्ड फायनेंस एण्ड डेवलपमेण्ट कॉर्पोरेशन देती है। 500 छात्रों को हर साल मिलती है यह स्कॉलरशिप।

एलिजिबिलिटी:– परिवार की कुल आय 1.8 लाख रुपये सालाना से ज्यादा न हो। किसी अन्य स्कॉलरशिप के लिए अप्लाय न किया हो।

सिलेक्शन:–जिस संस्थान में पढ़ रहे हैं, वहाँ के प्राध यापक से लिखित में अनुमति के बाद मेरिट बेसिस पर सिलेक्शन। **वैल्यू और ड्यूरेशन**:– ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए हॉस्टल में रहने वाले छात्रों को 1 हजार रुपये और अन्य को 700रुपये प्रति माह। डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स कर रहे हॉस्टलर्स को 700 रुपये और अन्य को 400रुपये प्रति माह। कोर्स–फीस भी 10 हजार रुपये तक की वापस मिल जायेगी।

10. अल्पसंख्यकों के लिए स्कॉलरशिप

मिनिस्ट्री ऑफ माइनॉरिटी अफेयर्स ने अल्पसंख्यक यानी मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी वर्ग के छात्रों को भी आर्थिक मदद देने के लिए स्कॉलरशिप बनायी हैं। इनके लिए सिलेक्शन प्रोसेस नहीं होती, छात्रों को सिर्फ इनके लिए अप्लाय करना होता है और पिछली परीक्षा में 50 फीसदी अंक जरूरी होते हैं। हर राज्य में स्कॉलरशिप की संख्या अलग है।

11. प्री–मैट्रिक स्कॉलरशिप

कक्षा पहली से 10वीं के छात्रों के लिए स्कॉलरशिप।

एलिजिबिलिटी:–परिवार की आय 1 लाख रुपये सालाना से ज्यादा न हो।

वैल्यू और ड्यूरेशन:–पहली से पाँचवी कक्षा तक के छात्र को 100रुपये प्रति माह मिलेंगे। छठी से दसवीं के छात्रों को 500रुपये एडमिशन फीस, 350रुपये ट्यूशन फीस। मेण्टेनेंस अलाउंस के रूप में हॉस्टल के छात्र को 600रुपये और अन्य को 100रुपये प्रति माह।

12. पोस्ट–मैट्रिक स्कॉलरशिप

11वीं कक्षा से पीएचडी तक की स्कॉलरशिप। हालाँकि, स्कॉलरशिप एलएलबी, एमबीए, एमसीए, बीई और एमबीबीएस के लिए नहीं है।

एलिजिबिलिटी:–कुल आय2 लाख रुपये सालाना से ज्यादा न हो।

वैल्यू और ड्यूरेशन:–11वीं और 12वीं के छात्रों के लिए 7 हजार रुपये तक की ट्यूशन फीस। हॉस्टलर्स के लिए 235 रुपये और अन्य के लिए 140रुपये प्रति माह मेण्टेंस। टेक्निकल और वोकेशनल कोर्सेस के लिए 10 हजार रुपये। एमफिल और पीएचडी में 510रुपये प्रति माह मेण्टेनेंस।

13. मेरिट कम मीन्स स्कॉलरशिप

सिर्फ टेक्निकल और प्रोफेशनल कोर्सेस में प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए हर साल 20 हजार स्कॉलरशिप।

एलिजिबिलिटी:–पिछली परीक्षा में कम–से–कम 50फीसदी अंक। किसी अन्य स्कॉलरशिप के लिए अप्लाय न किया हो। परिवार की आय 2.5 लाख रुपये सालाना से ज्यादा न हो।

सिलेक्शन:–मेरिट के आधार पर।

वैल्यू और ड्यूरेशन:–हॉस्टल के छात्र के लिए 10 हजार रुपये और अन्य छात्रों के लिए 5 हजार रुपये सालाना मेण्टेनेंस। कोर्स फीस दोनों के लिए 20 हजार रुपये सालाना। पीजी की पढ़ाई तक वैलिड रहेगी स्कॉलरशिप।

देश में पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप्स के बारे में जानने के लिए लॉग इन करें.www.dainikbhaskar.com

विद्यालय द्वारा राज्य–मेरिट के विद्यार्थी सम्मानित

विद्यालय द्वारा कक्षा–12 की कला–संकाय की राज्य–मेरिट में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर शास. कन्या उ.मा.विद्यालय की छात्रा कु. शिवानी प्रजापति को एवं कक्षा–12 की कला संकाये की राज्य–मेरिट में नवाँ स्थान प्राप्त करने पर उत्कृष्ट बालक उ.मा.विद्यालय के छात्र भूपेन्द्र सिंह रघुवंशी को सम्मानित किया गया। नगर के दोनों होनहार विद्यार्थियों को पुरस्कार–स्वरूप ट्रॉफी एवं प्रतीक–चिह्न भेंट किये गये। यह पुरस्कार नवांकुर की ओर से स्वतन्त्रता–दिवस के अवसर पर विधायक महोदय एवं अन्य मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रदान किये गये।

गुरुपूर्णिमा पर सम्मान

गुरु–पूर्णिमा के अवसर पर ''पत्रिका'' समाचार–पत्र एवं श्री सुरेश तनवानी द्वारा विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री शैलेन्द्रकुमार पिंगले को सम्मानित किया गया।

नन्ही कूची

कु. दीपिका बघेल, कक्षा–7

नन्ही कूची

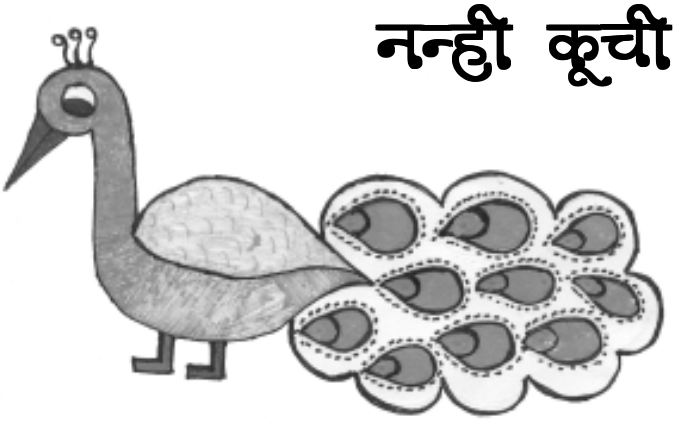

कु. शिवानी रघुवंशी, कक्षा–7

श्रद्धा–पुरस्कार–२०१३

कु. मनीषा शर्मा

कु. आकांक्षा बघेल

मैरिट–अवार्ड–२०१३

नीलेश कुमार सैनी

शुभम आचवल

राज्य–स्तर पर शतरंज–प्रतियोगिता में चयन

विशाल रघुवंशी

कु. आरती बारोटिया

राष्ट्रीय–सेवा–योजना

रासेयो द्वारा मनाया गया, छात्र–अभिमुखीकरण कार्यक्रम

रासेयो द्वारा मनाया गया, विश्व–जनसंख्या–दिवस

जिसे हारने का डर हो, उसकी हार निश्चित है। (संकलन–**कु. सोनाली दाँगी, कक्षा–9)**